having its head office in Janakpuri, New Delhi, restrained the Union of India from taking into consideration any document except the communication of the former Deputy Minister of Health and Family Welfare dated 14.6.91.

THE High Court, in its wisdom, has ruled that Government should not take into consideration the findings of the Expert Committee, but only the promise made by the former Deputy Minister, This is the judgement of the High Court. I leave it to the House to appreciate this sort of an order.

Anyway, we are bound by the judgement. The restrained the Union of India from taking into cosideration any other document to decide the matter of recognition of electropathy|electrohomoeopathy system of meicine and the B.E. M.S. course conducted by the petitioner organisation. In pusurance of the orders of the Allahabad High Court, a reasoned order has been been passed by the Union Health Secretary because the High Court had directed that the authorities should pass a reasoned order. Accordingly, the Union Health Secretary passed a reasoned order on 19th January, 1993, after taking into consideration all the relevant facts of the case. Now, Sir, this is what I wanted to inform the House. As per the directions of the High Court, we have passed a reasoned order. There is nothing more remains to be done about it.

About the observation made by my predecessor in regard to the system itself, neither I want to contradict it nor do I say I support it. The point is unless the experts in the country are satisfied about the efficacy of this system of medicine, as a layman, I cannot say anything about it.

I would therefore, request the hon. Member not to insist on the passage of this Bill. Let him wait. Let the system convience us that it has a case to be considered.

THE VICE-CHAIRAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Malaviya, are you withdrawing the Bill?

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Just two sentences only. Sir, four Members, namely Chowdhry Hari Singh, Shri Jagannath Singh, Shri Ahluwalia and Shri Sangh Priya Gautam, participated in the discussion on this Bill. The hon. Minister intervened the other day. I am grateful to the Members who have participated in the discusion. I am also grateful to the hon. Minister for having intervened although he opposed the Bill.

In the interest of the people and also those who are practising this system and those who are getting education in this system, I would like to withdraw my Bill.

The Bill was, by leave, withdrawn.

THE BANNING OF COMMUNAL POLITICAL PARTIES BILL, 1993.

श्री एन० एस० अहलुवालिया (बिहार) उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि :

"अपने राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये धर्म का उपयोग करने वालें और अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये वर्गीय अपील जारी करने वालें सभी राजनैतिक दलों पर, जिनके क्रियाकलाप राष्ट्रहित के विरूद्ध है, पाबन्द लगाने और तत्संबंधी विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक पर विचार किया जाये।"

उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरे ख्याल से जब से इस पृथ्वी पर धर्म का नाम आया है तभी से धर्म का विरोध भी आया है और धर्म के विरोध का भी

जन्म हुआ है । जब से इस पृथ्वी पर सभ्यता आई है तभी से असभ्यता का भी भी जन्म हुआ है । महोदय, जब तक इस देश में जम्हूरियत नहीं थी, गणतांत्रिक अधिकार नहीं थे, उसके पहले तक राजा का धर्म ही देश का धर्म होता था और वहां का राज-पुरोहित खड़े होकर राज-धर्म की स्थापना कर देता था और वही राज-धर्म देश में चलता था । कभी तलवार की धार पर, कभी बर्छे और भाले पर और कभी जबरन लोगों पर धर्म थोपा जाता था । पर जब से जम्हूरियत आई है, जबसे गणतांत्रिक अधिकार आये हैं तब से हरेक आदमी को अपने धर्म के पालन करने का मौलिक अधिकार मिला है और उस अधिकार के माध्यम से हरेक आदमी अपने मनपसन्द धर्म का पालन कर सकता है । ऐसे अधिकार हमें हमारे संविधान के माध्यम से मिले हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, एक वक्त ऐसा था जब इस देश के हिन्दू धर्म पर भी बड़ी विपत्ति आई थी और वह विपत्ति ऐसी थी कि रोज सवा मन जनेऊ जलता था और उस वक्त, मैं सिख धर्म से आता हूं, सिख धर्म के नौवें गुरू, गुरू तेगबहादुर जोकि चुटिया नहीं रखते थे, तिलक नहीं लगाते थे, जनऊ नहीं पहनते थे, पर उसके बावजूद उन्होंने जनेऊ की रक्षा के लिये, तिलक की रक्षा के लिये और चुटिया की रक्षा के किये अपना बलिदान दिया था । महोदय, इस सदन में मैं पहले भी बोल चुका हूं कि 9 साल के गुरूनानक को जिस वक्त जनेऊ पहनाने के लिये पंडित जी आये तो उन्होंने "न" कर दिया था । उन्होंने पंडित जी से कहा कि, पंडित जी क्या यह जनेऊ ऊंचनीच के भेदभाव को खत्म कर सकता है ? क्या यह जनेऊ अमीर और गरीब के फर्क को खत्म कर सकता है ? पंडित जी क्या यह जनेऊ दुख और सुख की परिभाषा को परिणत कर सकता है ? शांति और अशांति को मिटाकर एक बना सकता है ? अगर यह जनेऊ ऐसा नहीं कर सकता है तो मैं यह जनेऊ ग्रहण नहीं करूंगा, नहीं पहनूंगा । महोदय, उन्होंने वेदी वंश में जन्म लिया था । उनके परिवार वाले वेद ज्ञाता थे, लेकिन 9 साल की उम्र में गुरूनानक ने जनेऊ पहनने से इंकार कर दिया था और उसी के करीब 250 साल बाद गोविन्द राय, गुरू तेगबहादुर के पुत्र जो बाद में गुरू गोविन्द सिंह कहलाये, वे 9 साल की उर्म में अपने पिता को हुक्म देते है, गोविन्द राय को जिस वक्त कि उनके सामने उच्च-कुलीन काश्मीरी ब्राह्मण खड़े होकर गुजारिश कर रहे थे कि किसी तरह हमारे धर्म की रक्षा कीजिये, जबरन हमारा जनेऊ उतारा जा रहा है, जबरन हमारे मस्तक का तिलक पोंछा जा रहा हैं, जबरन हमारी बोदियां काटी जा रही हैं, जबरन हमारी सुन्नत की जा रही है, उस वक्त 9 वर्ष के बालक गोविन्द राय ने सुनकर कहा कि पिता, आप जाकर शहादत देकर अगर इनके शरीर के जनेऊ की रक्षा कर सकते हैं, अगर इनके मस्तिक पर तिलक चमकता रहे वह कर सकते हैं, अगर इनके सिर पर बोदियां सलामत रहें वह कर सकते हैं और इनके धर्म की रक्षा कर सकते है तो मैं अनाथ होने के लिये तैयार हूं ? मैं जबरन किसी को जनेऊ उतारने नहीं दूंगा, ऐसा कहकर वह खड़े हुये । अन्त में जाकर उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इस उदाहरण को इसलिये सामने ला रहा हूं, मैं कह रहा हूं कि आज जो धर्म या जिस धर्म के नाम पर बलशाली होकर हम लोगों पर अत्याचार करने की बात सोचते हैं या आज ऐसी बात जो समाज में खड़ी हो गई है, जो द्वेष खड़ा हो गया है, गली-मोहल्ले बंट चुके हैं और बांटे जा रहे हैं, यह किसके लिये, किस स्वार्थ के लिये ? आज कोई जबरन किसी का तिलक पोंछने के लिये नहीं, कोई मौलाना की दाढ़ी पर हाथ डालने के लिये, पर आज यहां पर जबरन यह इसलिये किया जा रहा है कि राज सत्ता हासिल करना नहीं है और पूरे समाज

को, 86 करोड़ जनता को जाति के नाम पर और धर्म के नाम पर बांट कर वोट-बैंक बनाना है। इस तरह का प्रचलन आज चला है और इससे हमारे देश की एकता को हमारे देश की अखंडता को, हमारे देश की सभ्यता को, हमारे देश की सिविलाइजेशन को, हमारे संस्कारों को कितना बड़ा आघात पहुंचने वाला है, यह सोचकर भी दिल कांपता है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारे पूर्व पुरुषों ने हमारे लिये जो कुछ किया है, हमारे लिये जो कुछ कहा है, अगर हम वह लेकर चलें तो हम इन चीजों से काफी दूर रह सकते हैं। मैं महाभारत को कोट करना चाहता हूं। महाभारत, जिसके बारे में कहा जाता है कि कोई अगर महाभारत की पुस्तक को, महाभारत के ग्रंथ को अपने घर में रखेगा तो उस घर में झगड़ा पैदा हो जाता है। लेकिन, यह सत्य नहीं है। महाभारत में भगवान कृष्ण विचरते हैं, महाभारत में कृष्ण भगवान के उपदेश भी हैं। उसी महाभारत में क्या कहा गया है धर्म के बारे में, मैं कोट करता हूं – अर्थात् धर्म वही है, जो किसी धर्म का विरोध नहीं करता। जो धर्म किसी दूसरे धर्म का विरोध करता है वह कुधर्म है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह मेरी बनाई हुई कुटेशन नहीं है बल्कि यह उस वक्त की कुटेशन है जब एक तरफ अर्जुन खड़े थे, कृष्ण साथ थे और दूसरी तरफ दुर्योधन, भीष्म पितामह वगैरह और उनका आशीर्वाद लेकर क्या क्या करना चाहते थे, यह उस वक्त की बात है। इन चीजों से, इन ग्रंथों से, इन पुराणों से, अपने पूर्व पुरुषों की कही हुई बातों से हमें सीखने को बहुत कुछ है, मगर जब भी आदमी लोभ में आता है और वह लोभ केवल रुपये पैसे का नहीं, जमीन जायदाद का नहीं बल्कि सत्ता के लोभ में, तो सत्ता के लोभ में पागल होकर आदमी अपनी विशेषतायें, अपनी सारी चीजें भूल जाता है और भूलकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये क्या कुछ नहीं कर बैठता है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने पिछले वर्षों में देखा है कि जो हमारे देश में एक सांप्रदायिक भावना, कुछ लोग उसे कहते हैं कि हम तो सांप्रदायिक भावना नहीं सांप्रदायिक सद्भावना जगा रहे हैं। महोदय, दुर्भाग्य है उस देश के लोगों के लिये, जिस देश के लोगों ने एक साथ मिलकर, एक साथ रहकर यहां की सभ्यता को पाला है, पोसा है, आगे बढ़ाया है और आज उसी सभ्यता को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करने पर जो उतारू हुये बैठे हैं और वह एक ऐसी संस्था चलाना चाहते हैं, एक ऐसा देश बनाना चाहते हैं जहां सिर्फ एक धर्म का ही आदमी रहे। . . . एक धर्म की ही बात चले और शायद गणतंत्र की हत्या करके एक नायकतंत्रवाद ही आ जाय तभी शायद ऐसी चीजें सफल हो सकेंगी, लेकिन जब तक गणतंत्र है देश में तब तक हमें अधिकार है। इस देश के हरेक नागरिक को अधिकार है कि वह अपने देश की सेवा करने के लिये अपने को आगे बढ़ाये।

उपसभाध्यक्ष महोदय, धार्मिक आस्था व्यक्तिगत आस्था है और मुझे तो पता नहीं, कौन सा धर्म है और कौन सा नेता है ऐसी धार्मिक संस्थाओं का जो कि घर में रोज प्रार्थना करता हो? वह प्रार्थना करता है अपने मोक्ष के लिये। सब धर्मों में, चाहे वह हिन्दू धर्म हो, चाहे सिख धर्म हो, इस्लाम धर्म हो, ईसाई धर्म हो, जैन धर्म हो हर धर्म में पालन करने का मुख्य कारण यही है कि हमारा एक अच्छा जीवन हो और उस जीवन के माध्यम से हम मोक्ष की प्राप्ति करें। यह हमारा व्यक्तिगत काम है और इस काम का जब हम सत्ता को पाने के लिये प्रयोग करने लगते हैं और इसे दूसरों पर थोपने लगते हैं तब देश में, समाज में तनाव पैदा होता है और यही तनाव कई वर्षों से पैदा किया जा रहा है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं खुद एक रिफ्यूजी हूं और मैं उस दुख-दर्द को, तकलीफ को समझता हूं। जिन्होंने इस देश के विभाजन का दुख देखा हो,

[श्री एस० एस० अहलुवालिया]

कष्ट देखा हो, जिन्होंने 1947 के बाद कष्ट को भोगा हो, वे इस तकलीफ को समझ सकते हैं लेकिन जिन्होंने विभाजन के कष्ट को समझा नहीं, विभाजन के कष्ट को झेला नहीं, विभाजन की दुविधाओं को और लुटती हुई इज्जतों को, बसे हुये घरों को उजड़ते हुये और बने बनाये घर जलते न देखे हों, उनकी जहनियत में यह बात नहीं उतर सकती कि आज हम किस कगार पर खड़े हैं और देश को किधर ले जा रहे हैं। क्या हम आज देश को एक और विभाजन की ओर ले जा रहे हैं? क्या सांप्रदायिक तनाव पदा करके हम इस देश को फिर टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं? क्या हम यहां पर कोई एक विशेष धर्म का राज कायम करना चाहते हैं, जिस तरह से हजारों साल पहले या सैकड़ों साल पहले तलवारों के जोर पर एक ही धर्म का राज कायम किया गया, उसी प्रकार आज उसका प्रादुर्भाव करना चाहते हैं? हमारे सामने बहुत सारे प्रश्न हैं। भारत की 86 करोड़ जनता का हरेक मानव, हरेक परिवार इस सोच में पड़ा हुआ है पर राजनीतिक दलों को ऐसी सुबुद्धि भगवान जाने कब आयेगी, कब वह सोचेंगे कि धर्म वास्तविक रूप में इस देश की जनता के व्यक्तिगत जीवन का एक अंग हैं। कौन सा नेता है, मेरे को कोई नेता खड़ा हो कर कह दे जो सुबह उठ कर अरदास करता हो, प्रार्थना करता हो या इबादत या नमाज पढ़ता हो और कहता हो, "हे पूर्व पुरुष, हे अकाल पुरुष, हमारे घर की सारी सुख-शांति मेरे पड़ोसी को दे देना और उनके घर में जो बच्चा कमजोर है पढ़ाई-लिखाई में, वह फ़र्स्ट डिवीजन आए और मेरा बच्चा फेल हो जाए या हमारी सुख-शांति में अगर देरी है तो कम से कम हमारे पड़ोसी को सुख-शांति अवश्य दे देना?" किसी पार्टी का नेता विराट हृदय लेकर, समुद्र की तरह हृदय लेकर ऐसी बात कह सकता है? अगर नहीं कह सकता तो धर्म के माध्यम से चाहे हम राम को पूजते हों, चाहे रहीम को पूजते हों, चाहे मोहम्मद साहब के सामने इबादत करते हों, चाहे जिजस क्राइस्ट के सामने प्रेअर करते हों, चाहे वाहे गुरू के सामने अरदास करते हों, हम सब अपने स्वार्थ की बात करते है, हम अपने व्यक्तिगत जीवन की बात करते हैं, हम अपने व्यक्तिगत मोक्ष की प्राप्ति की बात करते है और शायद वह दुनियावी जीवन से ज्यादा रुहानी जीवन की बातें होती हैं। लेकिन घर के बाहर जब मैं धर्म का प्रचार करते हैं, धर्म के नाम पर जब प्रहसन करते हैं, तब हम धर्म के नाम पर धर्म की भावनाओं को दूसरे लोगों के सामने जोड़ना चाहते हैं और जोड़कर उनको मजबूर किया जाता है कि इस देश में कोई पार्टी अगर है तो वह यह पार्टी है जो इस देश की संस्कृति की, संस्कारों की और सभ्यता की रक्षा कर सकती है। हम उस वक्त ठेकेदार बन जाते है कि इस देश के सभी मंदिरों की रक्षा हम कर सकेंगे या मंदिरों का पुनर्स्थान हम ही कर सकेंगे। हम उस वक्त ठेकेदारी ले लेते हैं कि हम इस देश के सारे गुरुद्वारों को ठीक से ला सकेंगे और उन गुरुद्वारों में सही प्रचार हम ही कर सकेंगे और सारी सिख कौम की ठेकेदारी हम ही ले लेते हैं। उसी तरह क्रिश्चिन बनकर सारे गिरिजाघरों की ठेकेदारी हम ही ले लेते है और उसी तरह एक मुसलमान बनकर सारी मस्जिदों की ठेकेदारी हम ही ले लेते हैं। परन्तु उपसभाध्यक्ष महोदय, शायद जिस वक्त हम यह ठेकेदारी लेते हैं उस वक्त उस कौम के हम दुश्मन बन जाते है। उसी वक्त उस कौम को हम गत की तरफ से जाते हैं और अग्रसरित होते हैं गत की तरफ। उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने पिछले दिनों देखा कि कुछ ऐसे राजनीतिक दल जिन दलों को जनता ने पूरी तरह से चुने थे, इन्होंने धर्म के नाम पर सबसे पहले "गौ हत्या बंद करो" का नारा लगाया और "गौहत्या बंद करो" का नारा लगाकर या इस देश की उन भावनाओं को जागृत करने की कोशिश की जो गौ को माता के रूप में मानते हैं और अब सभाध्यक्ष महोदय, बड़े आश्चर्य की बात हैं, उस वक्त नारा लगाया गया कि "गौ हमारी माता है, मुस्लिम उसको खाता है"

... (व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम :(उत्तर प्रदेश) नहीं, देश धर्म का नाता है।

श्री एस० एस० अहलुवालिया : और यह नारा लगाकर लोगों की भावनाओं को उभारा गया, लोगों की भावनाओं में दरारें पैदा की गई और समाज को बांटने की कोशिश की गई। परन्तु इस देश की जनता बहुत समझदार है। इस देश की जनता ने उसका सही जवाब दिया और उन्हें बहुत कुछ प्राप्ति नहीं हुई। सत्ता तब भी इनके हाथ में नहीं आई। उपसभाध्यक्ष महोदय, उसके बाद इन्होंने गंगाजली का एक नया नाटक रचा। गंगा नदी की पवित्रता के बारे में भारत देश के लोगों की भावुकता जुड़ी हुई है। कहावत है– "कांशी का मरा सीधा वैकुण्ठ को जाए" और इस कहावत के माध्यम से लोग गंगा मैया का स्नान करने के लिए कांशी, हरिद्वार जाते हैं और गंगा मैय्या का पानी जहां-जहां बहता है वहां वहां उसकी उपासना और पूजा अर्चना करते हैं। गंगा मैय्या के पानी को लकर खिलवाड़ शुरू हुआ। भारत के भावुक लोगों की भावुकता से खिलवाड़ करने की कोशिश की गई। उसके बावजूद भारत के लोगों ने अपनी समझदारी का परिचय दिया और उस भावुकता में नहीं पड़े।

उपसभाध्यक्ष महोदय, 1951 से लेकर 1991 तक इस भारतीय जनता पार्टी ने अपना नाम बदला। सबसे पहले हिन्दु महासभा के नाम पर प्रचलित हुई, फिर जनसंघ रखा . . . **(व्यवधान)**

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं इंटरफियर नहीं कर रहा हूं। हिन्दु महासभा नहीं थी। वह अलग थी। वह जनसंघ थी।

श्री एस. एस. अहलुवालिया : मैं अब नाम गिनाऊं कि वहां के कौन नेता यहां ट्रांसफर हुए हैं। . . . **(व्यवधान)** एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट किस-किसका किया, वह बताऊं। उपसभाध्यक्ष महोदय, उसके बाद जनसंघ रखा और जनसंघ के बाद भारतीय जनता पार्टी के नाम पर जानी गई और भारतीय जनता पार्टी ने 1952 से लेकर वही संघ परिवार की इस दौड़ में 1951 से लेकर 1991 तक कभी भी इन्होंने अपने मेनीफेस्टो में मंदिर की बात नहीं कही। अयोध्या, राम जन्मभूमि मंदिर क्या है, कहां है, इनके मैनीफैस्टो में कभी अंकित हुआ और कभी इन्होंने उसका उच्चारण नहीं किया। उसके बाद एकाएक इनको सूझा। आडवाणी जी जब भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष हुए तो इनके दिमाग में बात आई कि एक रथ यात्रा निकालनी जरूरी है और वह रथ यात्रा सोमनाथ से अयोध्या की ओर चली और उस रथ यात्रा के कारण पूरे देश में तनाव हुआ और पूरे देश में दंगे जैसी हालत हुई और कुछ इलाकों में दंगे भी हुए। लोग मारे गए, अल्पसंख्यकों के घर जला दिए गए।

महोदय, आश्चर्य की बात है गुजरात जैसे राज्य में, जिसको महात्मा गांधी का राज्य माना जाता है, जहां अहिंसा परमो धर्म का नारा चलता है, उस राज्य से जब आडवाणी जी गुजर रहे थे वहां एक ब्लाक है जीतपुरा, वहां उनकी आरती खून के प्यालों से उतारी गई। मैंने तो सुना था कि घी की आरती उतारी जाती है। गांव देहात में लोग मलाई मल देते हैं, दूध पिलाकर लोग आरती उतारते हैं। खून से भी आरती उतारी जाती है, यह पहली बार सुना और पहली बार देखा। उपाध्यक्ष महोदय, वह खून पूरे भारत को एक मैसेज दे रहा था।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं बिहार से राज्यसभा का सदस्य हूं। बहुत से मामलों में मेरे लालू यादव से मतभेद हैं पर मैं एक बात पर गर्व करता हूं कि लालू यादव जैसा एक बहादुर चीफ मिनिस्टर जो था, उसने उसको गिरफ्तार करके दिखा दिया और उसे बन्द किया और उसकी रथ यात्रा पर रोक लगाई। उसने कहा कि मैं ये अमानुषिक भावना और नहीं जगाने दूंगा, और आग लगाने नहीं दूंगा और उसने उस पर पूरी रोक लगाई। जिसके कारण यहां सरकार भी बदली गई। विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार भी चली गई। ऐसा माहौल होने के बावजूद इस पार्टी को रोका नहीं जा सका। इसने पहली बार 1991 के मैनीफेस्टो में कहा

कि हम राम मंदिर बनाएंगे। चूंकि 1989 का चुनाव जनता दल के साथ लड़ा था इसलिए कामन मैनीफैस्टो होने के कारण इन्होंने उल्लेख नहीं किया था। 1991 के मनीफैस्टो में इन्होंने कहा कि हम वहां राम मंदिर बनायेंगे और हर जगह नारे लगाते रहे।

उपसभाध्यक्ष महोदय, दो दिन पहले यहां राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर भाषण देते हुए कमल मोरारका जी कह रहे थे, बहुत अच्छी बात उन्होंने कही थी, कि अगर कहीं सिविल डिस्प्यूट हो जाए, प्रापर्टी डिस्प्यूट हो जाए और उसका फैसला होने में देर हो रही हो तो आदमी अपनी जमात इकठ्ठी करके उस घर पर कब्जा ले ले या घर गिरा दे, यही रवैया बी.जे.पी. ने अपनाया। कांस्टीट्यूशन की अवमानना की। कांस्टीट्यूशन की ही अवमानना नहीं की बल्कि सुप्रीम कोर्ट में जाकर वचन पर वचन देते रहे कि वहां कोई खतरा नहीं है, सब कुछ रोककर रखेंगे। उसके बावजूद इन्होंने मस्जिद को वहां जबरन गिराकर प्रमाण दिया कि हम हर काम जबरदस्ती कर सकते हैं। वे यह प्रमाणित करना चाहते थे कि हम गुंडई से या बदमाशी से या आदमी की जमात इकट्ठी करके अच्छे काम को नाकाम कर देंगे या इस देश के संविधान को भी अगर जरूरत पड़ी तो तोड़ डालेंगे ....(*व्यवधान*)

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, "बदमाशी" शब्द पार्लियामेंटरी नहीं है।

श्री शांति त्यागी (उत्तर प्रदेश) : आप तो शरीफ आदमी हैं आप क्यों भड़क गए ?

श्री संघ प्रिय गौतम : इसलिए कि और भी शरीफ बनें।

श्री एस० एस० अहलुवालिया : उपसभाध्यक्ष महोदय, इन चीजों को सामने रखते हुए आज यह विधेयक इस सदन में मैं पेश कर रहा हूं और इस विधेयक पर मैं पूरे सदन की चर्चा चाहता हूं, मेरा मकसद यह है कि जैसे कि मैंने कहा कम से कम इस देश के दर्द को समझने की कोशिश करो।

महोदय, हमारे लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 की उपधारा (3) में कहा गया है कि जो भ्रष्ट तरीके अपनाये जायें उन पर रोक लगाई जा सकती है, तो उस धारा में लेकुना है, थोड़ी सी कमजोरी है। वह कमजोरी यह है कि जब चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो जाए, तब आदमी धार्मिक भावनाओं को जगाने की कोशिश करता है तो उस पर ऐक्शन होता है। लेकिन उपसभाध्यक्ष महोदय, पांच साल तक हम रथ यात्रा करते रहें, तरह तरह की यात्रायें चलायें और जाकर जमातें इकट्ठी करके मस्जिद तोड़ें, गिरिजाघर तोड़ें, मंदिर तोड़ें और फिर वही शख्स चुनाव में पोलिटिकल पार्टी का कंपेनर बनकर प्रचार करे तो वह क्या मैसेज देता है देश के लिए। अब इस धारा के अनुसार कल को कोई भी पोलिटिकल पार्टी चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने तक तो सब कुछ करती है और चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो जाती है तो उसके बाद से वह धार्मिक उन्माद खड़ा नहीं करती, धार्मिक उन्माद की बात नहीं करती तो ऐसी पार्टियों को चुनाव प्रक्रिया में हिस्सा लेने के लिए ऐलाउ किया जाएगा? इन पर ऐसी पाबंदी लगाने के लिए ही मेरा यह विधेयक लाने का असली मकसद है क्योंकि पांच साल तक तो ये यों ही घूमते रहेंगे, पांच साल तक दर दर राम भगवान को लेकर घूमते रहेंगे जो राम भगवान लोगों के रोम रोम में बसता है, लोगों की सांस सांस के साथ चलता है, उस को लेकर टायोटा इंजिन के बने रथ पर ले जाकर घूमें, जो राम खुद रथ पर नहीं चढ़ा, न गद्दी प्राप्त की उसी मर्यादा पुरुषोत्तम राम को लेकर ऐसे घूमना शुरू किया जैसे उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम को कोई किराए पर मकान न दे रहा हो, उस को घर से निकाल दिया है। वह तो करोड़ों लोगों के रोम रोम में बसता है। लेकिन ऐसी भावनाओं को जगाकर इस देश के लोगों

की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करके उनकी धार्मिक भावनाओं को प्रिजुडिश करके सत्ता प्राप्ति की तरफ अपना लक्ष्य किए हुए है। इस रास्ते से अपने लक्ष्य की प्राप्ति को रोकने के लिए इस माध्यम से अपने लक्ष्य की प्राप्ति को रोकने के लिए मेरा यह विधेयक है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं चाहता हूं कि पूरा सदन इस पर विस्तार से विचार करे, इस पर बहस करे। तब मैं विस्तारपूर्वक जब अपना जवाब दूंगा तो बोलूंगा। मैं समझता हूं कि इस पर सदन आज की इस नाजुक स्थिति को ध्यान में रखते हुए कि वाकई इस देश के लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ हो रहा है या नहीं, इन सारी चीजों को मद्देनजर रखते हुए इस पर विचार करें। मैं उम्मीद करता हूं कि सदन का हर एक पक्ष इस विधेयक को समर्थन देगा।

इसी विश्वास के साथ मैं आपसे आज्ञा चाहता हूं। धन्यवाद।

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य अहलुवालिया जी ने जो विधेयक प्रस्तुत किया है उसके बारे में मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से राय रखने के लिए खड़ी हुई हूं। प्रस्तावक महोदय ने अपनी बातों को विस्तार से कहा और कई मुद्दों को उन्होंने सदन के समक्ष रखा मैं इस विधेयक के बारे में बात करते हुए आपके सामने संविधान से कुछ उद्धरण देना चाहती हूं। संविधान के प्रिएम्बल में ही अगर आप देखें तो संविधान बनाने वालों ने यह कहा है कि:

"We, the people of India, having solemnly resolved to constitute India into a Sovereign Socialist Secular Democratic Republic and to secure to all its citizens:

Justice, social, economic and political;

Liberty of thought, expression, belief, faith and worship;

Equality of status and of opportunity; and to promote among them all;

Fraternity assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation."

महोदय, इसके बाद मैं आपके सामने एक बात को और रखना चाहती हूं। संविधान निर्माताओं ने हम लोगों को; इस देश के नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार दिये हैं, समान अधिकार भी दिये हैं। जिसमें यह कहा गया है कि धर्म, जाति और लिंग भेद के कारण किसी नागरिक पर कोई भेदभाव नहीं होगा। इतना कहने के बाद मैं यह कहना चाहती हूं कि पिछली 6 दिसम्बर को इस देश में जो घटना घटी वह सचमुच में इस देश के लिए एक विभाजक रेखा बन गई है। हमारी जो मान्यताएं थी जिन मान्यताओं को लेकर हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने और उसके पहले अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के जमाने में जिन बातों को स्थापित करने की कोशिश की गई थी, जिस आदर्श भारत की कल्पना की गई थी उस आदर्श भारत की कल्पना जिसके सहारे वह जीवित है, उन सारी बातों पर, उन सारी बुनियादों पर कुठारा घात किया गया। मैं आपके सामने यह कहना चाहती हूं कि हमारे साथ दुनिया के कई देशों ने जो अंग्रेजी राज की हुकूमत के अधीन थे, उनकी हुकूमत के मातहत थे और अन्य देश आजाद हुये। अधिकांश देश फौजी हुकूमत के तहत चले गये। भारत वर्ष स्वतंत्र रहा। भारतवर्ष क्यों स्वतंत्र रहा क्योंकि वह लोकतांत्रिक पद्धति से चल रहा था। इसीलिये भारतवर्ष आज भी दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और यह इसलिये कि हमने धर्म निरपेक्षता को अपनी राजसत्ता का आधार माना। हमारा देश एक मल्टीरिलीजस, मल्टी ऐथनिक, मल्टी रेशियल सोसाइटी है। हर कोस पर भाषा बदलती है, हर कोस पर भाषा का रूप बदलता है, लोगों की पोषाक बदलती है, खान-पान बदलता है, लिबास बदलता है और फिर भी भारत एक है। क्योंकि हम विश्वास करते हैं—अभिवक्तम् विभक्तेषु में। हम यह विश्वास करते हैं कि हम एक हैं। हम अलग-अलग रहते हुये भी यूनिटी एंड डाइवर्सिटी में विश्वास

[श्रीमती कमला सिन्हा]

करते हैं। हम यह मानते हैं कि इस धरती में जो पैदा हुआ है वह भारतीय नागरिक है। जो भारत मां के सीने में पला है वह भारतीय है। यह सही है कि बरसों से, सदियों में से भारत ऊपर बारम्बार आक्रमण हुआ है। शक, हूण, पठान और मुगल यहां हमलावर बन कर आये, लेकिनकाल क्रम में वे हमारे बन कर रह गये। हमारे हिन्दुस्तान की रंग में मिल गये, खून में मिल गये, यहां की धरती में मिल गये। इस देश की कला, संस्कृति को उन्होंने अपनाया। आप किस-किस को अलग करेंगे? अगर यह कहा जाय कि अलग अलग लोग हैं, अलग अलग धर्म के लोग हैं, अलग अलग किस्म के लोग हैं तो मुझे लगता है कि इस देश में छटाई होने लगेगी तो केवल द्रविड़ संस्कृति के लोग ही जो आदिम संस्कृति के हैं, रह जायेंगे। शेष सभी जो राम का नाम लेने वाले हैं, राम भी तो आर्य थे और बाहर से आये थे। राम कोई भारत के रहने वाले नहीं थे। अगर इस दृष्टि से देखा जाय तो शिव इस देश के रहने वाले थे क्योंकि आर्यों का रंग गोरा होता है और शिव तो काले हैं, अनार्य देवता हैं। हिन्दू धर्म में यह प्रयास किया गया कि दुर्गा आर्य कन्या के साथ शिव का विवाह रचाया गया। आर्य कन्या का अनार्य पति के साथ शादी कराई गई। इस प्रकार से आर्य और अनार्य संस्कृति का एकीकरण करने की बात की गई। यह हमारा धर्म है। 6 दिसम्बर के बाद इस देश में धर्म के नाम पर नंगा नाच हुआ है। मैं यह कहना चाहूंगी कि यह जहर अंग्रेजों ने बोया था क्योंकि वे डिवाइड एंड रूल की पालिसी से राज करना चाहते थे। वे हिन्दुस्तान के अलग अलग लोगों को अलग अलग खेमों में बांट कर अपना निरंकुश राज चलाना चाहते थे। लेकिन इस देश के रहने वालों ने उनकी चालबाजी को समझ लिया था और इसलिये सारे लोग इकट्ठा होकर संघर्ष करते रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अंतिम दिनों में उनकी रहनुमाई में जो संघर्ष हुआ और हमें आजादी मिली। इसमें जितनें लोगों का खून बहा है, जितने लोगों ने बलिदान दिया है उनके खून का रंग एक ही है और उस खून का रंग लाल है। उसके बाद भी जितना खून सड़कों पर बहा है उस खून का रंग भी लाल है।

मैं आपसे कहना चाहती हूं कि हमारे साथी अहलुवालिया जी ने कहा कि ऐसे संगठनों पर, ऐसे राजनैतिक दलों पर जो धर्म के नाम पर राज करना चाहते हैं, उन पर प्रतिबंध लगाया जाय। निश्चित रूप से लगाना चाहिये क्योंकि हमने देखा है कि इतिहास में इसका उदाहरण है। इतिहास में हमने देखा है कि जर्मनी में क्या हुआ था? हिटलर समाजवाद लाने के नाम पर सत्ता में आया। उस समय जर्मनी की हालत अच्छी नहीं थी। आज जिस प्रकार की हालत हिन्दुस्तान की है वैसी हालत उसकी थी। उस समय वह सोसियल डेमोक्रेटिक पार्टी के नाम पर जीत कर सत्ता में आया और तानाशाह बन बैठा। उसने क्या कहा था? उसने कहा था कि जर्मनी आर्य संस्कृति का सबसे बड़ा नमूना है और जर्मनी में अनार्य नहीं रह सकते, नहीं बच सकते। उसने 50 मिलियन यहूदियों को मार दिया। मैंने येरूसलम में जाकर देखा है, मैं ईजरायल गई थी। यरूसलम शहर में एक म्यूजियम है उसका नाम है यादवासीम। अगर आप में से कोई वहां गया हो तो उसको देखा होगा। उसमें दिखाया गया कि छोटे बच्चों की खोपड़ियों के पेपर वेट बनाये गये थे। शरीर से चमड़ी निकालकर उन पर तस्वीरें बनाई गई थीं। ऐसे अनेकों दृश्य वहां पर हैं। दो-तीन हाल देखने के बाद मेरे से यह नहीं देखा गया और मैं एक जगह पर बैठ गई। तो उन लोगों ने कहा कि बहिनजी, आप तो देख भी नहीं पा रही है, हम लोगों ने तो इसको झेला है। क्या हम हिन्दुस्तान को भी ऐसी ही स्थिति में धकेलना चाहते हैं। यकीन मानिये, धर्म के नाम पर जो राज करना चाहते हैं वे देश में खून की होली खेलेंगे।

महोदय, मैं एक कविता पढ़ना चाहती हूं–

"यह जो सड़क पर खून बह रहा है,

इसे सूघ कर तो देखो,

और पहचानने की कोशिश करो,

यह हिन्दू का है या मुसलमान का।

सड़क पर बिखरे हुए पत्थरों के बीच में दबे

टिफन कैरियर की जो रोटी की गंध आ रही है,

यह किस जाति का है,

क्या तुम मुझे यह बता सकते हो,

यह रक्त सने कपड़े, फटे जूते, टूटी साइकलें किताब और खिलौने

इसकी कौम है क्या,

क्या तुम मुझे यह सब बता सकते हो,

हा, मैं बता सकती हूं,

ये रक्त सने कपड़े उस आदमी के हैं,

जिसके हाथ मिलों में कपड़े बनाते हैं, कारखानों में जूता बनाते हैं,

खेतों में बीज डालते हैं,

पुस्तकें लिखते हैं, खिलौने बनाते हैं,

और अंधेरी सड़कों पर लैम्प पोस्ट जलाते हैं,

इनकी कोई जात नहीं होती, ये मेहनतकश हैं।"

महोदय, हमारे देश की 6 दिसम्बर के बाद जो हालत हुई, आगे चलकर क्या होगी, यह कहना मुश्किल है। हमारी सरकार, मुझे अफसोस है कि अहलुवालिया जी उसी दल के हैं, हमारी सरकार, जो आज सरकार देश को चला रही है, यह सरकार बिल्कुल नपुंसक सरकार है। इस सरकार के पास कोई विल पावर तो है ही नहीं। कुछ करने के लिये इस सरकार के पास डिटरमिनेशन आफ पावर भी नहीं है। इस सरकार ने 25 फरवरी को जो दिल्ली में दिखाया तो लगा कि सरकार है लेकिन 6 दिसम्बर को लगता ही नहीं था कि इस देश में कोई हुकूमत भी हैं। ऐसा कोई भी नहीं समझ पा रहा था। फौज खड़ी है थोड़ी दूर पर, 3 किलोमीटर की दूर पर और अयोध्या में नंगा नाच हो रहा था। किनका ? कार सेवकों का। ये कौन थे ? कार सेवक कहां से आये थे ? इसकी कहानी अलग है, यह गौतम जी बतायेंगे क्योंकि इसके बारे में उनको मालूम होगा। ट्रेनिंग वगैरह तो इन्हीं लोगों ने उनको दिया है। **(व्यवधान)**

श्री संघ प्रिय गौतम : आपसे बहुत ज्यादा मालूम है। लेकिन मैंने इंटरप्ट करना छोड़ दिया है। अखबार वाले मेरे खिलाफ लिखने लगे हैं इसलिये मैं इंटरेप्ट नहीं करूंगा।

श्रीमती कमला सिंहा : कार सेवकों ने वहां पर नंगा नाच किया। हम लोगों ने एक महिला गोष्ठी की थी। उसमें एक पत्रकार लड़की थी जिसके साथ दुर्घटना घटी, जिसके साथ बलात्कार को छोड़कर बाकी सब कुछ किया गया। यह लड़की रूचिरा गुप्ता थी और आपको जानकर खुशी होगी कि वह बिहार की लड़की है, उसके चाचा सोशलिस्ट थे और हेरल्डलास्की के स्टुडेंट थे। उसने जब अपनी कहानी सुनाई जो उसने बताया उससे हमारे रोंगटे खड़े हो गये। राम के नाम पर मंदिर बनाना, ढांचा तोड़कर बनाना और वहां कहा कि यह लड़की विधर्मी है, मुसलमान है, उसका गला दाबा, उसके गले में निशान था। हम लोगों ने जब देखा तब भी था। तो क्या राज देंगे ये ? ये कहते हैं कि हम हुकूमत करने वाले हैं, क्या हुकूमत करेंगे, किसके ऊपर हुकूमत करेंगे ? श्मशान के ऊपर।

महोदया, मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि अगर सरकार होती, तो केन्द्रीय सरकार हिन्दुस्तान के 84 करोड़ लोगों द्वारा चुनी हुई सरकार अगर,

[श्री ति कमला सिन्हा]

इसके पास दम होता तो 6 दिसम्बर की घटना न घटती और 6 दिसम्बर की घटना न घटती तो आज यह विधवा विलाप नहीं करना पड़ता। कोई भी संस्था, कोई भी राजनैतिक दल, उसको बैन करने से पहले सोचना चाहिये। सरकार ने बैन किसको किया ? दो-तीन आर्गनाइजेशन को बैन किया और बैन करने के पहले उनको पूरे 10 दिन का मौका दे दिया कि हम आपको बैन कर रहे हैं, हम आपको बैन कर रहे हैं। उन्होंने अपने सारे बैंक के खाते, सारा संगठन और सारा इंतजाम पूरी तरह से कर लिया और उसके बाद सरकार ने बैन किया। बैन होने के बाद क्या किया, नाम बदल दिया। अब आर०एस०एस० बैन आर्गनाइजेशन है। लेकिन उन्होंने दूसरा एक आर्गनाइजेशन बना लिया, फटाफट राम सेवा समिति। यह भी आर०एस०एस० है और सरकार को अंगूठा दिखा दिया। राम सेवा समिति बनाकर सरकार को अंगूठा दिखा दिया। तो यह जो तरीका है, सही नहीं है। अगर सरकार को बैन करना था तो तत्काल उसी समय बैन करने की कार्यवाही करनी चाहिये थी। सरकार ने समय पर कार्यवाही नहीं की इसलिए सरकार बराबर दोषी है। देश में धार्मिक उन्माद फैलाने के लिए पहले ही दिन से अगर कोई दोषी है तो वह आज की कांग्रेस की सरकार ही दोषी है क्योंकि मौके-मौके पर इन्होंने धर्म का इस्तेमाल वोट पाने के लिये किया है। हम उसको भूले नहीं हैं (**व्यवधान**) हम उस बात को भूले नहीं है और न इस देश की जनता उसको भूली है लेकिन अब इनमें से कुछ लोगों को खास कर अहलुवालिया जी जैसे एक साथी माननीय सदस्य को यह होश आया कि ऐसे संगठन को जो राजनीति के लिये... (**व्यवधान**)

SHRI VISHVJIT P. SINGH: (Maharashtra): Madam, I would request you to alow me one minute. Mr. Vice-Chairman, Sir, there have been a number of blasts in Bomba. A number of people have been killed. There have been major explosions. I implore you to kindly ask the Government to come out with a statement on what is happening in Bombay. This is a very serious matter. The city has been rocked with all kinds of problems in the recent past at the moment it is on fire. We want a statement immediately from the Home Minister.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI (Gujarat): There have been explosions not only in the Stock Exchange but in the Air India building as well. There have been casualities. The Home Minister must come out with a statement immediately.

श्री एस०एस० अहलुवालिया : उप सभाध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। जब हम इस सदन में अभी चर्चा ही कर रहे हैं कि इन कार्यकलापों से हमारे देश में तनाव पैदा हो रहा है। अभी जो खबर मिली है कि बम्बई में बम ब्लास्ट हुए हैं और देश में राष्ट्रविरोधी शक्तियां सक्रिय हो गई हैं तो मैं आपसे मांग करता हूं कि सदन में पूरा स्टेटमेंट होना चाहिये और गवर्नमेंट वैरीफाई करके इस घटना के बारे में सदन में रिपोर्ट दें।

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: I support this demand.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The hon. Minister of State for Home Affairs.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI P. M.SAYEED): Mr. Vice-Chairman, Sir the hon. Members have brought this matter before the House. Government will enquire about it and will come back immediately with full information.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: Would it be ossible to have it today itself before the House gets adjourned?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The Minister has assured that he will come with a statement. We cannot force them.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: We are just requesting him. We are very much concerned with what is happening in Bombay. Obviously people are going to ask us. In the interest of the nation if we can have some information ...(*Interruptions*)...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Everybody is concerned ...(*Interruption*)...

SHRI VISHVJIT P. SINGH: We should allow Government some time to collect some information. It has just happened.

THE VICE-CHAIRMAN (Shri V. Narayanasamy): Ms. Kamla Sinha, you can continue.

श्रीमती कमला सिंहा : उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी जिस घटना के बारे में माननीय सदस्यों ने चर्चा की है कि बम्बई स्टॉक एक्सचेंज और एयर इण्डिया की बिल्डिंग में बम ब्लास्ट हुए हैं यह निस्संदेह टेरिस्ट एक्टीविटी, एंटीसोशल एलीमेंट्स की एक्टीविटी का एक नमूना है। बम्बई के बारे में मैं कहने ही जा रही थी। जनवरी महीने में, 6 जनवरी से 15 दिनों तक बम्बई में घटनाएं घटीं जिसमें धर्म के नाम पर, कुनबापरस्ती के नाम पर एक संगठन जिसका मैं नाम नहीं लेना चाहती जिसके बारे में सरकार बार बार बोल रही है कि बैन करना होगा, बैन करना होगा लेकिन मिलीजुली कुश्ती जारी है। उनका रिलेशनशिप लव एंड हेट का है। लव एंड हेट का रिश्ता तो चलने वाला नहीं है। अब सरकार को फैसला करना होगा कि वह चाहती क्या है। ऐसे संगठन जो नाजायज तरीके से हथियार, बमों का इस्तेमाल कर के येनकेनप्रकारेण सत्ता हासिल करना चाहते हैं धर्म के नाम पर, किसी देवता के नाम पर, किसी दिवंगत नेता के नाम पर तो सरकार को इसको रोकना चाहिये। तत्काल सरकार को इसके ऊपर कार्यवाही करनी चाहिए।

4.00 P.M.

महोदय, मैं अधिक समय न लेते हुए अपनी बात थोड़ी देर में ही समाप्त करुंगी। मैं यह कहना चाहती हूं कि राजनीति और धर्म दो चीजें हैं। धर्म व्यक्तिगत चीज है, अपने जीवन की चीज है, अपने परिवार की चीज है, श्रद्धा की चीज है, भक्ति की चीज है। जिसके प्रति अपकी श्रद्धा हो भक्ति हो आप उस धर्म का पालन करें। मैं तो हिंदू कुल में पैदा हुई लेकिन मैंने यह समझा और मुझे जो समझाने वाले थे, जो बचपन से शिक्षा पायी वह यह कि धर्म उसी का नाम है जिसका धारण करके मनुष्य जीता है। क्या धारण करके मनुष्य जीता है? सत्य, अहिंसा, कर्तव्य। यह रास्ता है जीवन का। यही धर्म है। धर्म का मतलब यह नहीं कि सड़क के ऊपर एक पत्थर रख दो और कल हो तो उसमें एक बजरंग बली की मूर्ति रख दो, परसों बजरंग दल हो जाए और रथ में रामजी की मूर्ति बैठा दो और रामजी ने जिस काम को जन्मभर किया उसका उल्लंघन करते रहो अपने जीवन में सामूहिक जीवन में। तो यह धर्म नहीं है यह धर्म का दुराचरण है, उल्लंघन है। धर्म व्यक्तिगत जीवन की चीज है। सामूहिक जीवन में, सामाजिक जीवन में वही धर्म है जिसको हम सदाचार कहते हैं जिसको हम कहते हैं एक साथ मिलकर चलो और हमारे धर्म ने क्या सिखाया, "वसुदेव कुटुम्बकम"। वसुधा ही हमारा कुटुम्ब है। सारी दुनियां हमारा कुटुम्ब है। जब सारी दुनियां ही हमारा कुटुम्ब हो तो हम टुकड़े-टुकड़े में कैसे बांटेंगे। हम धर्म के नाम पर, कुनबपरस्ती के नाम पर कैसे बंट सकते हैं। वह धर्म नहीं है, और जिस धर्म की बात ये लोग करते हैं इकोनोक्लिएिट की तरह वह धर्म नहीं है। वह धर्म आदमी को, मनुष्य को, समुदाय को एक कट्टरपंथी गिरोह में बांध देता है जिसमें शारीरिक मानसिक, दिमागी तौर पर, वैचारिक दृष्टि से जो उदारवादिता है वह समाप्त हो जाती है और जब मनुष्य की चिंता और मानसिक विकास की कुंठित हो जाती है तो वह मनुष्य मनुष्य नहीं रहता है। अपनी बात को समाप्त करने के पहले मैं स्वामी विवेकानन्द की कुछ बात आपके सामने रखना चाहती हूं। मुझे जरा दो मिनट का समय देंगे उसके बाद मैं अपनी बात को समाप्त करुंगी।

रविन्द्र नाथ टैगोर की एक कविता है। वह कविता है :

"एइ भारतेर महामानवेर सागरतीरे
हेथाम दाड़ाए, दुबाहू बाड़ाए नमि नर-देबतारे ।

हेथाम आर्य, हेथाथ अनार्य, हेथाम द्राविड़ चीन,

शक हूण दना, पाठान मोगल एक देहे हल लीब,

एसो है आर्य एसो अनार्य हिन्दू मुसलमान,
एसो आज तुमि हुंगराज, एसो एसो किस्तान

एसो ब्राह्मण शुचि करि मन धरो हाथ सबाकार,

एसो से पतित होक अपनीत सब अपमान भार,

मायेर अभिषेके एसो एसो तवय मंगलघट हमनि ने भरा

सवार परसे पवित्र करा तीर्थ नीरे,

एइ भारतेर महामानवेर सागर तीरे ।"

यह भारतवर्ष का चित्र है । इस भारतवर्ष को, मैं कहना चाहती हूं अपने बी०जे०पी० के भाइयों को कि इसको न तोड़ें । बी०जे०पी० के साथियों को मैं कहना चाहती हूं कि इसको तोड़ें नहीं । अगर आप तोड़ेंगे तो भारतवर्ष का आम नागरिक, अनपढ़ गांव में रहने वाला नागरिक, भूखा नंगा परेशान रहने वाला नागरिक, जानता है, आपसे ज्यादा अच्छा वह जानता है कि हमारे पड़ौसी हमारे मित्र हैं, हमारे भाई हैं । हम एक साथ सदियों से रहते आये हैं । आज भी मैं होली के समय अपने गांव में गयी थी, अपने शहर में तो मैंने वहां एक साथ लोगों को होली खेलते हुए देखा, हिंदू मुस्लिम सबको एक साथ खेलते हुए देखा । अभी रमजान का महीना चल रहा है । एक साथ रोजा अफ्तरी भी हो रही है । ईद में भी गले मिलेंगे । इसमें आप दरार मत डालिये । अगर दरार डालेंगे, तो हिंदुस्तान आपको माफ नहीं करेगा और सरकार को इसके बारे में निश्चित रूप से फैसला लेना चाहिए कि हमें क्या करना है और जो हिंदुस्तान को तोड़ना चाहते हैं, भाई-भाई को बांटना चाहते हैं, इस देश में खून की होली खेल कर सत्ता हासिल करना चाहते हैं, ऐसे लोगों को कतई सरकार को माफ नहीं करना चाहिए और सरकार को भी पूरे तौर से सख्ती बरतनी चाहिए ।

मुझे इतना ही कहना है । धन्यवाद ।

चौधरी हरि सिंह (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, अभी-अभी सदन में इस सदन के आदरणीय सदस्य ने एक बड़ी अफसोसनाक सूचना दी और सूचना का संदर्भ इस बिल से बहुत ही समीप से संबंधित हो जाता है।

यह बिल जो लाया गया है, उसकी मूल भावना यह है कि जो राजनीतिक पार्टियां धर्म और सांप्रदायिक का भयंकर प्रभार-प्रचार करके सत्ता को हथियाना चाहती हैं, यह उस पर रोक लगाये जाने के संबंध में बिल है ।

पोलिटिकल पार्टीज और धार्मिक पार्टियां या संस्थायें यह दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं । हमारे संविधान के मुताबिक और पीपल्स रिप्रेजेंटेशन एक्ट के मुताबिक किसी भी राजनीतिक पार्टी को, कोई भी अपने चुनाव में धार्मिक, भड़काने वाली, झगड़ा फिसाद करने वाली, जाति के नाम पर भयंकर युद्ध करने वाला, जो भी कोई उम्मीदवार अगर इस तरह का प्रचार करेगा, तो वह केंडिडेट नहीं हो सकता है। उसका इलैक्शन जो है, वह डिसक्वालिफाई किया जा सकता है । तो हमारे संविधान में भी इस तरह का संकेत है और पीपल्स रिप्रेजेंटेशन एक्ट में भी है । तो यह पोलिटिकस पार्टीज को बैन करने की आवश्यकता की जो एक मुहिम का अहम सवाल बन कर खड़ा हो गया, सदन में उसकी चर्चा चल पड़ी, मान्यवर, कभी आपने सोचा कि यह प्रश्न क्यों आया । वह इसलिए आया कि जो निराशा पार्टीज थीं, जो जनता की सेवा करके वोट के सहारे शासन में नहीं आ सकती थीं,

वह हिंदुस्तान का जो एक चला आया सिलसिला है, उससे फायदा उठाने के लिए उन्होंने धर्म का सहारा लिया ।

आप जानते हैं और आप तो स्टूडेंट रहे हैं पोलिटिकल साइंस के, आपने पढ़ा होगा लास्की की थियोरी पढ़ी होगी, बोसांके की पढ़ी होगी और एडमंड बर्क की थियोरी पढ़ी होगी, कि कोई भी पोलिटिकल पार्टी की जो काम है, वह बुनियादी तौर पर यह है कि वह अपने संगठन के जरिए मेम्बर्ज एनरोल करके अपने राष्ट्र की सीमा के अंदर जो वहां की जनता है, अपने मकसद के साथ उनका भला करना और अपने काम के जरिए शासन को प्राप्त करे, कुछ चुने हुए लोगों को सत्ता देकर के मुल्क की बहबूदी के लिए काम करना, यह पोलिटिकल पार्टी का मुख्य मुद्दा होता है ।

किसी भी पोलिटिकल पार्टी को अगर पावर, सत्ता में आना है, शक्ति में आना है, शासन करने का हक हासिल करना है, तो उसको जनता की सेवा करनी चाहिए, देश के नागरिकों का मन जीतना चाहिए, अपने साफ इलेक्शन, मनिफेस्टो मकसद होते हैं, लगातार सालों-साल तक प्रचार करना चाहिए, लोगों के बीच में जाना चाहिए, लेकिन जैसा कि मैंने अभी निवेदन किया था, श्रीमन् जो निराश हो गये, सत्ता में नहीं आ सकते, जल्दी से उनको बड़ी गद्दी नहीं मिल सकती, लेकिन उनके दिल में ख्वाहिश हो गई इस समय कि पिछले चुनाव में 33.7 प्रतिशत में उनकी उत्तर प्रदेश में सरकार बन गई, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में बन गई। अब उनकी भूख बढ़ गई कि केवल 33 प्रतिशत में हमारी सरकार बन सकती है । अगर हम मंदिर-मस्जिद के बनाने के सवाल को लेकर के सारे देश में यह आग लगा दें, तो हम सारे देश की सत्ता संभाल सकते हैं ।

तो मैं कह रहा था, जैसा कि मैंने आपसे निवेदन किया कि इन निराश पालिटीशंस की भूल से कि जो हिंदुस्तान की गद्दी पर बैठना चाहते हैं, इसलिए वह घिनौने हथकंडे इस्तेमाल करना चाहते हैं और इस कीमत पर करना चाहते हैं कि हिंदुस्तान का समाज, देश, सामाजिक ताना-बाना कौमी एकता, राष्ट्रीय एकता टूट जाए। लेकिन हमको गद्दी मिल जाए, हम प्रधान मंत्री बन जायें, केन्द्र का मंत्री बन जायें। मुल्क चाहे खंड-खिखंड हो जाए, देश एक रहे या न रहे, कौमी झगड़े चलते रहें, कोई बात नहीं, लेकिन हमको गद्दी मिलनी चाहिए। यह सब उन परिस्थितियों का पहले के हमारे ये सारे उन चीजों, घटनाओं का, मैं सांप्रदायिक झगड़ों की ओर इशारा आपको नहीं करना चाहता हूं कि अहमदाबाद में क्या हुआ, वहां पर उत्तर प्रदेश में क्या हुआ और दिल्ली में क्या हुआ, ये कितने झगड़े फसाद किसके लिए हुए? इसलिए हुए कि हमको गद्दी चाहिए। यह इन सारी परिस्थितियों ने मजबूर कर दिया, श्रीमन्, किसी भी पोलिटिकल पार्टी जिसके घिनौने उद्देश्य हों, मकसद हों, हथियार हों, हथकंडे हों, जिसके प्रचार का तंत्र जब घिनौना हो, राष्ट्रीय एकता को तोड़ता हो और राष्ट्रीय जी हमारी वसीयत चली आ रही है सैंकड़ों साल की, हजारों साल की, जिसने अपने बुद्ध भगवान के जरिए, जन भगवान के जरिए, हमारे महापुरुषों के लिए दुनियां को संदेश दिया, उस संदेश की कीमत पर आज हकूमत में आने के लिए जो हथकंडा अपनाया उसी के खिलाफ मजबूर हो करके हमारे अहलूवालिया साहब ने यह बिल पेश किया। यह आवश्यकता बन गई, यह आवश्यकता पदा हो गई। जब तक ऐसी पोलिटिकल पार्टी चाहे वह किसी वर्ग की हो, मैं हिन्दु-मुसलमान की बात नही कहता, हिन्दु की सिर्फ नहीं कहता हूं, आज के मुख्तलिफ फिरकों में यह जो साँप्रदायिक संस्थायें हैं ये हर धर्म के अन्दर हैं। मैं किसी विशेष धर्म की बात नहीं कहता हूं। अगर मैं उन नारों को दोहराऊं, ऐसे ऐसे नारे सुने जाते थे जिससे हैरान होता था, लगता था कि मुल्क मिटने जा रहा है, टूटने जा रहा है। यह तो मुल्क जो है जो एकता के नाम पर होना चाहिए, एक रहना चाहिए, यह सब खंड-खिखंड होने जा रहा है। इसलिए आज यह बिल आया है। जसा कि मैंने अभी कहा कि यह बहुत आवश्यक भी है और इस बिल की जरूरत इस बात के लिए भी पड़ी, देखिए यह हमारे जो जिनको यह सत्ता का चस्का लग जाता

[चौधरी हरि सिंह]

है, वह सत्ता जो है वह बहुत बेहोश बना देती है और अब तो अफसोस यह है कि जो राजनीतिक सत्ता बड़े सूझ-बूझ वाले नेता कहे जाते हैं वे भी ऐसे साधुओं जिनको दीन दुनिया का पता नहीं, जिन्होंने दुनिया निकल कर कोई नहीं, देखी अपने मठाधीश उसमें बठे रहे, मंदिर में बैठे रहे, धर्मशाला में बैठे रहे, लोग उनके चरण छूते रहे, समझे कि हम ही एक खुदा हैं और जैसा हमको सुख मिल रहा है, जैसा हमारा काम है सारा हिन्दुस्तान ऐसा ही है। यह हमारा जो देश है, यह रंग-बिरंगी, यह गंगा-यमुनी संस्कृति सभ्यता का और एकता का यह मुल्क है। मान्यवर, मैं क्या कहूं, बहुत हो गया, बहुत चीजें मेरे दिमाग में आती हैं, मैं बड़े साफ तौर पर कह देना चाहता हूं कि आज जय श्री राम कहलाने वालों से कहना चाहता हूं कि जिस तुलसी दास जी ने अपनी रामायण लिखी है, जिस शैली का उन्होंने अनुकरण किया है, दोहे-चौपाई को लिया है मालूम है उसी तुलसी दास जी ने किस-किस शैली की नकल की, किसकी शैली को अपनाया, मलिक मोहम्मद जायसी की और मैं यह कहना चाहता हूं कि जो हिन्दी की लिपि का अन्वेषण करने वाला है वह भी मुस्लिम कम्युनिटी का आदमी है। मैं इसके लिये सबूत पेश कर सकता हूं। तो यह जो मैं कह रहा था कि हमारी जो हिन्दुस्तान की वसीयत, संस्कृति यह सत्ता के लिये इसमें लोभ में आने के लिये, जो तरह-तरह का संगठन बनाये हुए हैं, हिन्दू के नाम पर, मुसलमान के नाम पर, इनसे सारे मुल्क को मत खड़ा करवाइये यह मुल्क मुझको बड़ा फख है और मुझको बड़ी खुशी होती है कि यह प्रजातंत्र दुनिया के अन्दर सब से बड़ा लार्जेस्ट प्रजातंत्र का मुल्क है। इतनी बड़ी तादाद में वोट किसी दूसरे मुल्क में न डाले जाते हैं। इलैक्शन में कितनी स्वतंत्रता है, कितना खुल कर प्रचार किया जाता है। मामूली से मामूली आदमी हिन्दुस्तान के बड़े से बड़े आदमी की आलोचना कर सकता है और यहां के हुकूमत करने वाले लोग पब्लिक के बीच में जा करके अपनी सफाई देते हैं, उनके सवालात और जवाब सुनते हैं और चुनकर आने का मौका मिलता है। यह जो हिन्दुस्तान की सब से बड़ी पार्लियामेंट है यह हिन्दुस्तान के लोगों की ख्वाहिश और उनकी इच्छा है, उनको वह मेंडेट देती है कि जा करके आप हमारे देश की हकूमत चलाइये। वह खुद अपनी मर्जी से, अपनी राय से जो अपना मत है उससे उसके हाथ में अपना तंत्र सौंपते हैं कि पांच साल के लिये हमारे देश का भाग्य, हमारी ऐसी पालिसी बनाइये। जिससे कि हमारा देश खुशहाल हो, तरक्की करे और आगे बढ़े।

मान्यवर, मैं गौतमजी से माफी मांगते हुए उनकी पार्टी का नाम लिये बगैर कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में आपकी पार्टी की सरकार रही, आपकी क्या परफार्मेंसेस है, यह मैं पूछना चाहता हूं भारतीय जनता पार्टी के बैठे हुए लोगों से कि उनकी सरकार की उत्तर प्रदेश में क्या एचीवमेंट रही? चाहे वीकर सेक्शन की बात ले लें, किसान की बात ले लें, मजदूर की ले लें, सिंचाई की, खेती की, मकान बनाने की, बिजली की ले लें। वह सरकार सिर्फ मंदिर-मस्जिद करती रही। अरे भाई यह काम तो साधु-सन्यासी और मुल्ला-मौलवियों का होता है, राजनीतिक लोगों का नहीं। हमें तो पब्लिक ने चुनकर भेजा है कि आप हमारे लिये काम कीजिये, जो हम तनख्वाह पाते हैं उसके एवज में बल्कि उन्होंने अपनी इच्छा से अपने आपको सौंपे हैं कि उनके हितों के लिये काम कीजिये जिससे कि प्रदेश का भला हो। अब वे कहते हैं कि हम हिन्दुस्तान की सरकार चलायेंगे। अब कन्या कुमारी से रथ की यह जो बात है, यह तो वातावरण को विषाक्त बनाने की बात है, यह सब प्रजातंत्र में नहीं होता है। उसमें तो मुल्क बहुत ज्यदा कायदे-कानूनों के मुताबित नहीं चलता है, लिखित कानून से नहीं चलता है। डेमोक्रेसी तो कनवेनसंस, कस्टम्स, परम्पराओं से और

मेलजोल से काम करती है। हम यहां पार्लियामेंट में झगड़ा करते हैं, नोक-झोंक करते हैं, एक दूसरे को खरी खोटी सुनाते हैं, लेकिन माइंड में नहीं रखते हैं। जब सेंट्रल हाल में मिलते हैं चाहे एक पार्टी के हों या दूसरी के, बड़े प्रेम से एक-दूसरे से बात करते हैं। यह भी एक हमारा पार्लियामेंटरी कनवेनसन है। मान्यवर, अमेरिका के व्हाइट हाउस में ऐसा कोई हाल नहीं है। यह तो हिन्दुस्तान की डैमोक्रेसी की देन है पार्लियामेंट जिसमें कि एक ऐसा सेंट्रल हाल है कि सारी पार्टीज के लोग एक परिवार की तरह हंसते-बोलते हैं, खाते-पीते हैं और प्रायवेट-से-प्रायवेट और पब्लिक-से-पब्लिक बात भी करते हैं। यह कनवेंशन होता है, परम्पराएं होती हैं और आपसी भाईचारे का एक रिफ्लेक्शन होता है।

मान्यवर, अब इस कानून की आवश्यकता क्यों हुई क्योंकि पालिटिकल पार्टीज ने इन सारी चीजों को भुलाकर सिर्फ एक तंत्र फैलाया सारे मुल्क के अन्दर कि धर्म के नाम पर इसको सरकार चलानी है। धर्म के नाम पर हिन्दुस्तान की नाप-तौल होने लगी। धर्म के नाम पर इंसान को छोटा-बड़ा समझा जाने लगा और ऋषि-महात्मा वामदेव जी ने तो यहां तक कह दिया कि अब देश मनु स्मृति के अनुसार चलेगा संविधान के अनुसार नहीं चलेगा। महोदय, जो लोग कहते हैं कि समाज की मुख्य धारा में अकलियतों के लोगों को दाखिल किया जाता रहा, मैं कहना चाहता हूं कि यहां का जो हिंदू समाज है उसमें जो वर्षों से, सदियों से शेड्यूल्ड कास्ट के लोगों, दलित लोगों को धिक्कारा गया। उन्हें मंदिर में नहीं घुसने दिया गया। उन्हें मंदिर की सीढ़ियां नहीं छूने दी गयीं, जिन पर धर्म के नाम पर अत्याचार हुए, लेकिन धर्म परिवर्तन नहीं किया। उन्हें इतना धिक्कारा गया फिर भी कोई हिंदू धर्म में रह सकता है तो वह दलित लोग हैं। बी०जे०पी० के लोग तो उन्हें मुख्य धारा में शामिल नहीं करना चाहते। वह सोचते हैं कि ये फॉरेन लोग हैं। मैं गौतम जी से माफी मांगते हुए कहना चाहता हूं कि बी०जे०पी० के, आर०एस०एस० के, विश्व हिंदू परिषद के और बजरंग दल के लोगों की अगर भीतर की कहानी हम सुनेंगे तो कोई भी खुद्दार आदमी, कोई भी दलित वर्ग का स्वाभिमानी आदमी होगा जो सेल्फ रिस्पेक्टिंग होगा, जो जागरूक और चैतन्य होगा, जो समानता में विश्वास करता होगा, जिसके दिल में पिछड़े वर्ग और दलित वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए लगन होगी—ऐसा कोई भी नौजवान, कोई भी दलित वर्ग का नेता, कोई भी कार्यकर्ता, कोई भी लीडर, ऐसे दल का मेंबर नहीं हो सकता। मैं यह चुनौती के साथ कह सकता हूं कि आज सभी दलों में यह समानता आई है लेकिन आज बी०जे०पी० और जिन दलों का मैंने जिक्र किया, वहां पर आज भी दलित लोगों और शैड्यूल्ड कास्ट के लोगों को विदेशी समझा जाता है और घिनौनी तथा घृणा की नजर से देखा जाता है। बराबरी के दर्जे का वर्ताव वहां उनके साथ नहीं किया जाता। तो फिर मेन-स्ट्रीम मुस्लिम का क्या कहते हो भाई? ईसाई को क्या कहते हो? जब आप अपनी ही जाति के, सदियों पुराने सैकड़ों वर्ष पुराने शेड्यूल्ड कास्ट के, लोगों को इस धारा में शामिल नहीं कर पा रहे, उनको आज तक निभाने को तैयार नहीं, उनके लिए अपने दिल खोलने को तैयार नहीं, अपने हृदय में जगह देने को तैयार नहीं? तो वह भी देखते हैं कि जब उनके भाइयों का यह हाल है तो हमारे साथ क्या करेंगे? मैं कहना चाहता हूं कि जो बार-बार आडवाणी जी और दूसरे इनके लोग कहते हैं कि हमको भी मेन मुख्य धारा में आना चाहिए, मुख्य धारा में आना चाहिए तो मैं उनसे निवेदन करता हूं कि पहले अपने घर के आदमियों को तो मुख्य-धारा में दाखिल करो। जो लोग आपका नाम रखते हैं, आपके मंदिर और मूर्तियों के पुजारी हैं, जो श्रीराम के नाम पर नाम रखते हैं, उनको ही आप जब नहीं ला पाते हो तो दूसरे की क्या बात करते हो? मैं कहना चाहता हूं कि जो ऐसी पोलिटिकल

[चौधरी हरि सिंह]

पार्टीज हैं उनके पास देश की, समाज की विकास की कोई योजना या कोई तंत्र नहीं है। यह जो बेनिंग आफ द पार्टी है, अगर इनको पूरी छूट देते रहे कि ठीक है भाई आपको बेन नहीं करते तो कैसे काम चलेगा। बहुत से लोग आपके बड़े फिलोस्फर, बड़े थिंकर बनते हैं कि भाई हिन्दुस्तान में दो-चार आर्टिकल लिख दीजिए, दो चार भाषण दे दीजिए तो आप बड़े थिंकर हो गए, इन्टलेक्चुअल ज्वायंट हो गए, आपकी बड़ी गिनती हो गई। आपका एसोसिएशन कुछ हो गया, आपका लेक्चर हो गया, टेली-विजन और रेडियो से भी हो गया। अब चौधरी साहब का या हमारा कुछ आता ही नहीं। ...**(व्यवधान)**... तो लिहाजा वह बुनियादी बात सोचने वाले नहीं हैं, जो ऊपर फाइव स्टार की कल्चर वाले हैं, नई नई फिलोसफी और थ्योरी वाले हैं। इन थ्योरीज के बारे में कहना चाहता हूं कि जो थ्योरी के जंजाल में पड़कर यह कान्सप्रेसी रचते हैं। मुझको बड़ा अफसोस होता है धर्म के नाम पर भी ऐसा होता है। मैं वाल्मीकि रामायण का बड़ा उपासक भी हूं। महर्षि वाल्मीकि का हर साल बड़ा फंक्शन, कवि सम्मेलन करते हैं, मेरे लेक्चर उन पर होते हैं। महर्षि वाल्मीकि जी ने राम को जन्म दिया और आज महर्षि वाल्मीकि की रामायण का ही अतापता नहीं और जो बेचारे पूरी तरह से उनको मानते हैं सालों से, उनको बी०जे०पी० के लोग देश का मानते ही नहीं। ...**(व्यवधान)**...

अरे, अत्याचार की बात तो अत्यधिक है, शेड्यूल्ड कास्ट पर भी होते हैं। खुशी की बात यह है और मैं बड़े गौरव के साथ कहता हूं कि जब भी अकलियत का सवाल आता है, उन पर अत्याचार का सवाल आता है, उनकी पोलिसीज का सावल आता है, प्रोग्राम का सवाल आता है और अगर कोई दरलित भाई की हत्या होती है या उन पर जुल्म होता है या उन पर अत्याचार होता है तो समाज के कुछ उच्च वर्ग के कहलाने वाले लोग जो कि राजनीतिक तौर पर जागरूक हैं, जिनके दिलों में सांप्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा है वह लोग दिल से उन सवालों के लिए लड़ते हैं, संघर्ष करते हैं। यह बड़ी खुशी की बात है और मैं कहना चाहता हूं कि हमारे समाज के साथ बड़ा अन्याय हुआ, लेकिन समाज के ही दूसरे बहुत से लोग हुए हैं, जिन्होंने इसके लिए ऐसे लोगों को ललकारा भी है और फटकारा भी है। स्वामी विवेकानंद जी कौन थे? स्वामी दयानन्द जी कौन थे? इन लोगों ने समाज के ऐसे लोगों को फटकारा या नहीं फटकारा? यह वामदेव की संतान और यह जो आजकल की संतानें हैं, किसने फटकारा था इनको? स्वामी दयानन्द ने फटकारा, स्वामी विवेकानन्द ने फटकारा, रामकृष्ण जी ने फटकारा और फिर महाराष्ट्र के जो महान पुरुष हुए नामदेव जी, उन्होंने फटकारा। यह एक सुधार की परंपरा वर्षों से चली आ रही है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरी पर्सनल फीलिंग है, मैं उनको नकारना नहीं चाहता। मैं यह नहीं कहना चाहता कि कुछ हुआ ही नहीं। भाई, सामाजिक बुराई जो होती है, इस समाज की प्रोब्लम ऐसी नहीं कि डंडे के जोर पर आप उसे कर दें। गौतम जी नाराज न हों तो मैं एक बात और कह दूं, अभी बैकवर्ड क्लास की बात आई थी, क्रीमी-लेयर का जिक्र उसमें किया गया है। शेड्यूल्ड कास्ट में भी बड़ी मोटी क्रीमी लेयर मौजूद है। शेड्यूल्ड कास्ट में अगर गौर से देखें तो कुछ ही फैमिलीज हैं, उनके लड़के, उनके गांव के लड़के, वह सब सेलेक्शन में होते हैं और जो बेचारे सैकड़ों कौम हैं, उनका आज भी वही हाल है जो पचास-साठ साल पहले था। उनको कोई लाभ नहीं पहुंच पाया। उनको कोई फायदा नहीं पहुंच पाया। उनको नौकरी नहीं मिल पा रही है। वह बेचारे पढ़े-लिखे बेरोजगार फिर रहे हैं। उनको न कोई लोन मिल पा रहा है, न कुछ दूसरी सुविधा मिल पा रहे हैं। तो क्रीमी-लेयर आपके हाथ में ही तो है। शेड्यूल्ड कास्ट में आपकी लेयर से भी ज्यादा मोटी लेयर है। ...तो मैं कहना चाहता हूं कि

समाज में सुधार के लिए मुश्किल यह है कि यह एक दरिया जैसा होता है और दरिया को आप एक कोने से उठाकर दूसरे कोने पर नहीं जोड़ सकते, इसको जहां-जहां काटकर के, सुधार करके तब वहां ले जाया जा सकता है। हमारी यह मंशा जरूर है कि सामाजिक सुधार हो, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि यह जाति के नाम पर जो सिक्युरिटी रेस है, कुछ कम्युनिटीज हिन्दुस्तान में ऐसी है जो बैठकर खाती-कमाती रही हैं, हुकूमत भी करती रही हैं। एक महात्मा थे भगवान बुद्ध, वह जिंदा थे तब भी उनकी वजह से कुछ लोग खाते रहे, मर गए तो उनकी पूजा से खाते रहे और बाद में भी खाते रहेंगे, ऐसे ही दूसरे आपके जैन हुए। अब तो संख्या का सवाल आ गया। बी०जे०पी० वाले क्या कहते हैं कि भई, अब तो हमारी लहर है, गांव-गांव में लहर है। मैं कहता हूं कि जिनकी लहर है, उनसे इनके बड़े लीडर कांप रहे हैं। वह लहर जो है पिछड़े लोगों की, दलित लोगों की, गरीब लोगों की, बेकवर्ड लोगों की, कांग्रेस के जो हमारे कार्यकर्ता हैं, सैकड़ों सालों से जो काम करते हैं, उन लोगों की है। . . (**समय की घंटी**) . . तो जैसा कि मैंने कहा कि किसी भी पालिटिकल पार्टी को अगर हिन्दुस्तान में रहना है, अब ऐसा वक्त पैदा कर दिया है ऐसी पार्टियों ने कि इतनी स्वतंत्रता उनको नहीं दी जा सकती कि मनमाने तौर पर नाइक स्पीच दे दें, एक कौम को दूसरी कौम लड़ा दें। धर्म के नए-नए मुद्दे उठाकर के वे इलेक्शन जीतने की साजिश करते रहें। अगर इस तरह की पालिटिकल पार्टीज को छूट दे देंगे तो यह मुल्क एक नहीं रह सकता, यहां डेमोक्रेसी नहीं रह सकती, संविधान कायम नहीं रह सकता। इसलिए ज्यादा समय न लेते हुए मैं कहना चाहता हूं कि अगर वक्त की आवाज को आपने नहीं समझा और इन पालिटिकल पार्टीज के ऊपर आपने बैन नहीं लगाया, जो घिनौना और नफरत का झगड़ा करने वाले हैं, धर्म के नाम पर सत्ता करने वाले और उसके विपरीत देश के गरीब करोड़ों लोग, जिनके पास घर नहीं है, कपड़ा नहीं है, मकान नहीं है, खाने-पीने को नहीं है, शिक्षा नहीं है, अगर ऐसी पार्टीज के लोग धर्म के नाम पर सत्ता में आ गए सैकड़ों हजारों साल पहले जो इनका हाल था, वही होगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि वक्त की आवाज को पहचानिए और कमीशन बैठाकर के इनको बैन करने का कानून बनाइए, प्रेक्टिकल शेप देने की तैयारी करनी चाहिए।

मैं आखिर में अपने अहलुवालिया जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने बहुत अच्छा विधेयक पेश किया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री संघ प्रिय गौतम : उपसभाध्यक्ष महोदय, संसद राष्ट्र की सर्वोच्च संस्था है और इसमें सारे देश के सभी सम्प्रदायों के, पंथों के, भाषाओं के, प्रान्तों की भावनाओं को प्रतिबिम्बित और उनका प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति चुनकर आते हैं या भेजे जाते हैं। उसमें भी राज्य सभा में तो आम तौर से वे लोग आते हैं जो पढ़े-लिखे तो हैं ही, प्राय विधान सभाओं में विधायक रहे हों, मंत्रि-परिषद में मंत्री रहे हों, मुख्य मंत्री रह हों, संसद सदस्य रहे हों या मंत्री रहे हों। मुझे उम्मीद तो यह थी कि हमारे सम्मानित सदस्य ने इस विधेयक को प्रस्तुत करने से पहले इसे पढ़ा भी होगा और इसे समझा भी होगा, लेकिन मैं क्षमा चाहता हूं कि न तो उन्होंने समझा और न उन्होंने इसे पढ़ा। मैं वह व्यक्ति हूं और मेरी पार्टी वह पार्टी है कि किसी भी प्रकार का सम्प्रदायवाद इस देश में यदि देश की एकता अखंडता और देश की समरस्ता को भंग करता है, समाज को ध्वस्त करता है, देश के विकास में अड़ंगा लगाता है तो मैं और मेरी पार्टी उसके सख्त विरोधी हैं, थे और रहेंगे। लेकिन पहले तो मैं यह बताना चाहता हूं कि धर्म और पंथ में जमीन-आसमान का अंतर है। आपका विधेयक ही गलत है। आपने कहा है, जो धर्म का प्रचार करते हैं उन पर पाबंदी लगा देनी चाहिए—संविधान धर्म के ऊपर तो जोर देता ही

है और धर्म के माने मैं बताऊंगा कि क्या होते हैं–कोई भी आदमी राजनीति में पंथ का प्रचार नहीं कर सकता। लेकिन धर्म का प्रचार कर सकता है। अपने संविधान की मूल प्रस्तावना में हमने कहा है कि—"हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष" जिसका मतलब होता है रिलीजन, कम्युनलिज्म। लेकिन धर्म का मतलब रिलीजन से नहीं है, धर्म का मतलब मॉरलिटी से है, धर्म का मतलब मॉरल वैल्यू से है, मानवीय सिद्धांतों से है। जब मैं यह बात कहता हूं तो मैं अपने विद्वान साथियों को बताना चाहता हूं कि संसार के जितने भी मानव-प्राणी हैं चाहे वह भारत के हों, चाहे आस्ट्रेलिया के, अफ्रीका के, अमेरिका के या इंग्लैंड के हों और चाहे तथाकथित हिन्दू-मुस्लिम, सिख, इसाई, पारसी, जैन, बौद्ध हों, अगले-पिछड़े हों, शैड्यूल्ड कॉस्ट या बैकवार्ड क्लासेज हों, सारे संसार के लोग नर और मादा के मिलने से पैदा होते हैं और सब के पैदा होने का समय सारे संसार में समान है– 9 महीना, ज्यादा से ज्यादा दस-साढ़े दस महीने का जीव जिन्दा मानव पैदा होता है, उसके बाद मरा हुआ और कम से कम 7 महीने का व उससे छोटा मरा हुआ होता है। मादा के गर्भाशय में सबके बनने की प्रक्रिया एक है और जब मानव मां के पेट से बाहर आता है तो उसके आने की प्रक्रिया एक है और जब मानव बाहर आता है तो उसके सिर पर चोटी नहीं होती, दाढ़ी नहीं होती, खतने नहीं होते, उसके बदन पर कोई कपड़ा नहीं होता, उसका कोई नाम नहीं होता।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद सिब्ते रजी) आसीन हुये]

उपसभाध्यक्ष महोदय, सारे संसार के मानव प्राणी समान प्रक्रिया द्वारा समान समय में, समान रूप से बगैर नाम के नंगे ही पैदा होते हैं। मान्यवर, जब सारे संसार के मानव प्राणी समान रूप से, समान समय में, समान प्रक्रिया द्वारा, बगैर नाम के नंगे ही पैदा होते हैं तो इनका धर्म अलग-अलग कैसे हो सकता है? मानव का धर्म केवल एक है जिसे कहते हैं—"मानव धर्म" उर्दू में इंसान का मजहब एक है—मजहबे इंसानियत। अंग्रेजी में, मेरी भाषा में धर्म की परिभाषा अलग है।

Religion of humanity is one that is called religion of humanity.

यह है धर्म। तो फिर यह हिन्दू-मुस्लिम, सिख, इसाई, पारसी, जैन क्या हैं? यह धर्म नहीं हैं, यह दुकानें हैं लोगों की अपने सौदे को बेचने के लिए। अगर यह दुकानें समाप्त हो जाएं तो संसार में धर्म की प्रस्थापना हो जाए और मानव के बीच की खाई मिट जाए। आज यहां पर सब ने अपनी-अपनी दुकानें रखकर के अपनी अलग पहचान बनाकर के अपना सौदा बेचा है और यहां पर मानव-मानव को बांट दिया है। सरदार जी, मैं आपका ध्यान चाहूंगा। धर्म के ऊपर आधारित अगर कोई राजनीतिक दल है और वह धर्म का प्रचार कर सत्ता में आता है तो हमें इसका समर्थन करना चाहिए। आपने यही कहा है कि साम्प्रदायिक राजनीतिक दल से ऐसा कोई राजनीतिक दल अभिप्रेत है जो चुनाव जीतने के लिए धर्म का उपयोग करता है, तो फिर उसका जो समर्थन करना चाहिए। लेकिन हमें दुख इस बात का है कि इस देश में... (**व्यवधान**) मैं पूर्व उपसभाध्यक्ष तथा माननीय संसद सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि मेरी बात को भी सुनें। सर, धर्म क्या है? चोरी मत करो, झूठ मत बोलो, डाका मत डालो, व्यभिचार मत करो, खाने-पीने की चीजों में मिलावट मत करो, बलात्कार मत करो, भूखे को रोटी, नंगे को कपड़ा, बीमार को इलाज। जो इस्लाम में भी कहा है—मोमिन, तेरा पड़ौसी अगर भूखा है तो तुझे सोने का हक हासिल नहीं है जब तक उसको रोटी न खिलादे। लब्ज मोमिन नहीं है। लब्ज पड़ौसी है, लब्ज मोमिन नहीं है। यह है धर्म। जो इसका प्रचार करता है। जो कहता है

इस देश में न कोई गरीब, न कोई अमीर, न कोई छोटा, न कोई बड़ा, न कोई ऊंच, कोई नीच, न कोई अछूत, न कोई छूत जो यह प्रचार करता है वह धर्म का काम करता है। लेकिन कौन मांगता है यह सब कहकर मत ? इस हिन्दुस्तान में जब संघ प्रिय गौतम ने यह कहकर वोट मांगा तो अपमानित किया गया, मत नहीं मिले, चुनाव जीतकर के नहीं आ सका। मजाक उड़ाया लोगों ने। आज मजाक उड़ाया जाता है। ये है धर्म। इसका पालन इस देश के किसी समुदाय ने किसी पार्टी ने नहीं किया। कोई पिछड़ों की बात करता है, कोई अगड़ों की बात करता है, कोई पूंजीपतियों की बात करता है, कोई अल्पसंख्यकों की बात करता है, कोई बहुसंख्यकों की बात करता है। कोई गुंडई के नाम पर, कोई बूथ कैपचरिंग करके, कोई पैसे के नाम पर, कोई भाषा के नाम पर, कोई प्रांत के नाम पर वोट मांगता है और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करता है। यह इस देश में होता रहा है। अब इस संप्रदायवाद के मायने क्या है ? आपने इसकी परिभाषा पहले तो गलत की लेकिन संप्रदायवाद—

means and includes, communalism means and includes

जिसका नॉमिनक्लेचर कम्युनल हो, जिसका नाम जातिवादी हो जैसे अकाली दल, यह सांप्रदायिक दल हैं। मुस्लिम लीग, ये सांप्रदायिक दल हैं, गोरखा फ्रंट, बोडो कान्फ्रेंस और क्रिश्चियन पीपुल्स पार्टी।

श्री एस० एम० अहलुवालिया : महोदय मैं अकाली दल की हिमायत नहीं करता पर आपकी इन्फारमेशन के लिए बता दूं कि सिक्ख अकाली नहीं हुआ करते। सिखों को अकाली नहीं कहा जाता। अगर आपका कांसेप्ट ये है कि सिख अकाली होते हैं और वह उनका दल है तो ये गलतफहमी दूर कर दीजिए। अकाली दल एक पोलिटिकल पार्टी है और उसमें कम्युनल भावना हो सकती है। मैं उनसे सहमत नहीं हूं पर हर सिख अकाली नहीं है। यह मैं बता देना चाहता हूं।

श्री संघ प्रिय गौतम : मान्यवर, सम्मानित सदस्य को मैं यहां बता देना चाहता हूं कि न मैं यह कह रहा हूं और न मेरे कहने का यह अर्थ है। मैंने कहा नॉमिनक्लेचर, नामकरण जिससे स्पष्ट दिखाई देता हो। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने अपनी एक संस्था बनाई थी—ऑल इंडिया शैड्यूल कास्ट फैडरेशन लेकिन उसका नाम बदलना पड़ा और—

subsequently he named it the Republican Party of India.

उसके पीछे उनकी भावना क्या थी कि—Scheduled Castes Federation is a communal nomenclature

और जाति-विहीन समाज की स्थापना की जब मैं बात करता हूं तो फिर ये कम्युनल नाम हटाना होगा।

तब मुस्लिम लीग, ये कम्युनल नॉमिनक्लेचर है और जो इनका प्रचार करके उन्हीं वर्गों के हित के लिए और दूसरे वर्गों के खिलाफ नफरत पैदा करते हैं, ये कम्युनल लोग होते हैं, ये कम्युनल पार्टियां होती हैं।

मान्यवर, हमारे माननीय दोस्त ने इसकी परिभाषा सही नहीं की और अगर आप ईमानदारी से इसको केवल भारतीय जनता पार्टी तक सीमित रखना चाहते थे तो आप विधेयक लाते कि भारतीय जनता पार्टी एक सांप्रदायिक संस्था है और इस पर बैन होना चाहिए। मैं तो यह सोच रहा था कि इतने बड़े देश के हित में, इस सर्वोच्च संस्था में एक ऐसा विधेयक आप लाएंगे जिसका प्रभाव सारे देश के हित में पड़ेगा। मान्यवर, मैं यह निवेदन करता हूं कि कुर्सी बहुत बड़ी है लेकिन कुर्सी से बड़ा वह है जो उस पर बैठा है। बिल बहुत अच्छा है लेकिन बिल की भाषा और उसे प्रस्तुत करने वालों की सोच और उसका कांसेप्ट क्या है, इस पर बहुत निर्भर करता है। मेरे लायक दोस्त ने इस गरिमा को खत्म कर दिया। उन्होंने इसको केवल भारतीय जनता पार्टी तक सीमित कर दिया पार्टी देश से बड़ी

[श्री संघ प्रिय गौतम]

नहीं होती है, देश पार्टी से बड़ा होता है । अनेकों पार्टियां हैं जो यहां काम करती हैं ।

महोदय, संसार में दो तरह की मान्यताएं हैं । एक तो ईश्वरवादी और दूसरी अनीश्वरवादी । ईश्वरवादी मान्यता यह है कि संसार को कोई बनाने वाला है । संसार को कोई चलाने वाला है । संसार को देखने वाला है । संसार में बुरा काम करने वालों को दंड और अच्छा काम करने वालों को ईनाम देने वाला है और उसकी मरजी के बगैर पत्ता तक नहीं हिलता । एक तो ये मान्यता है और दूसरी मान्यता अनीश्वरवादी है । अनीश्वरवादी मान्यता यह है कि संसार एक वैज्ञानिक प्रक्रिया का प्रतिफल है । इसमें बहुत से काम वैज्ञानिक तरीके से स्वयं होते हैं । जो कुछ कर्ताधर्ता है वह व्यक्ति स्वयं है । लेकिन जो ईश्वरवादी विचारधारा के मानने वाले लोग हैं मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि ईश्वर प्राप्त कैसे होता है ? क्या मसजिद में जाकर या मंदिर में जाने से या गुरुद्वारे में जाकर या चर्च में जाकर ? जो ईश्वर को मानते हैं और घंटी बजाकर

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम ।

का भवन कीर्तन करते हैं, क्या उनको ईश्वर प्राप्त होता है ? जो गुरु ग्रंथ साहब का पाठ करते हैं क्या उन को ईश्वर मिल जाता है । क्या मसजिद में नमाज पढ़ने से परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है, क्या उसको खुदा मिल जाता है ? ईश्वर की प्राप्ति के लिए ईश्वरीय रास्ते पर चलना होता है । ईश्वरीय रास्ते पर चलकर ईश्वर प्राप्त होता है । ईश्वर प्राप्ति का रास्ता क्या है उसको मैं बताता हूं कि ईश्वर प्राप्ति के लिए मानवीय सिद्धान्त अपनाने चाहिएं जिसका मैंने वर्णन कर दिया कि चोरी मत करो, डकैती मत डालो, व्याभिचार मत करो, खाने-पीने की चीजों में मिलावट मत करो, मुनाफाखोरी मत करो, किसी के माल को मत छीनो, किसी को नीच मत समझो, किसी को ऊंच मत समझो । सरदार जी, गुरु ग्रंथ साहिब की मैं इसलिए तारीफ करता हूं कि उस में कबीर जी की वाणी है । उस में रविदास जी की वाणी है । मैं आपको पंथ निरपेक्ष के माने बताना चाहता हूं । इस देश में कोई पंथ निरपेक्ष यदि है तो वह हिन्दू है । पंथ निरपेक्ष के माने क्या है ?

Who believes in one person,

वह पंथ निरपेक्ष नहीं है ।

Who believes in one book,

वह पंथ निरपेक्ष नहीं है ।

who belives in one 'ism' or dogma,

वह पंथ निरपेक्ष नहीं है । यहां पर बहुत से लोग हैं जो केवल एक व्यक्ति में विश्वास करते हैं । वे यह मान बैठे हैं कि उसके बाद कोई नहीं होगा । जो एक ही किताब में, एक ही "इज्म" में या एक ही "डोग्मा" में विश्वास करता है वह पंथ निरपेक्ष नहीं है । लेकिन हिन्दू एक परसन में नहीं बल्कि अनेक में विश्वास रखता है, वह राम को भी मानता है वह कृष्ण को भी मानता है, वह बुद्ध को भी मानता है ... (**व्यवधान**)

श्री एस० एस० अहलुवालिया : आपने गुरु ग्रंथ साहिब का नाम लिया । उसे एक ही किताब क्यों बोलते हैं ? उसमें कबीर जी की भी वाणी है, रविदास जी की भी वाणी है । मैं आपकी इंफॉर्मेशन के लिए बताना चाहता हूं कि गुरु ग्रंथ साहिब में 36 संतों की वाणी है जिसमें 6 सिख गुरु हैं । ... (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): Mr. Ahluwalia, I would request you to clarify all these things when you reply. Please.

श्री संघ प्रिय गौतम : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब की तो मैं तारीफ करता हूं क्योंकि उसमें कबीर जी के शब्द हैं, रविदास जी की वाणी है लेकिन आपने ध्यान नहीं दिया । आपका ध्यान नहीं था । आपको उस पर लज्जा आ रही है ... (**व्यवधान**)

तो मैं कह रहा था कि ईश्वरीय सिद्धान्त के माने सैक्युलर के माने एक इज्म नहीं है । हिन्दुओं का विश्वास शिव

में, विष्णु में, राम में, कृष्ण में, बुद्ध में है। उसके सब देवता हैं। सब ईश्वर के अवतार हैं ।

He is not confined to one person.

वह एक किताब में विश्वास नहीं करता जैसे कि सिख लोग गुरुग्रंथ साहिब में करते हैं, मुसलमान कुरान में करते हैं, ईसाई लोग बाइबिल में करते हैं । हिन्दू तो सब को बराबर मानते हैं । वह किसी एक इज्म से पीड़ित नहीं है । डोग्मा से तो आप लोग इतने पीड़ित हैं कि जैसे हमारे यहां कलैक्टर होते हैं और उनके यहां चपरासी होता है । जब घंटी बजती है तो "हुजूर" कहता आता है । हमारे यहां बुलंदशहर में रात को भी सोते में एक चपरासी हुजूर कहता था । आप लोगों का विश्वास, कांग्रेस वालों का विश्वास न राम में है, न बुद्ध में है, आपकी तो राजीव जी और इंदिरा जी का नाम लिए बगैर पाचन क्रिया शुरु ही नहीं होती । आप तो यहां तक एक इज्म में, एक व्यक्ति में विश्वास करने वाले हैं । तो मैं बता रहा था कि हिन्दू तो इतना सैक्यूलर है । जहां तक भारतीय जनता पार्टी का प्रश्न है आज तक उसने संप्रदाय के नाम पर उन्होंने कभी वोट नहीं मांगा राम के नाम पर अगर उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर हम बनाएंगे तो आपने भी जब आप धर्म स्थल के नाम पर विधेयक लाए थे... (**समय की घंटी**)

श्रीमन, 25 मिनट लिए हैं हरिसिंह जी ने भी... मुझे 15 मिनट दे दीजिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद सिब्ते रजी) 15 मिनट आप आलरेडी ले चुके हैं ।

You cannot equate yourself with any other Member who has taken more time. It is up to the Chair.

श्री संघ प्रिय गौतम : पांच मिनट और दे दीजिए । मैं यह कह रहा था कि आप यह कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी हिन्दुओं के वोट के लिए यह कर रही है। आपने तो अपने घोषणा पत्र में मिजोरम में यह कह कर वोट मांगे थे कि अगर हम को वोट देंगे तो हम क्रिश्चन्स की सरकार बनायेंगे । आपने यह प्रोपेगेंडा किया । मुस्लिम लीग जो कम्युनल है आपकी सरकार का साथ दे रही है । उसमें शामिल है । नेशनल कांफ्रेंस से आपने समझौता किया हुआ है । जिस की बात आप कर रहे हैं शिव सेना, उसके लोग आपकी सरकार में बैठे हुए हैं । उनको आपने बैठाया है । नौ सौ चूहे खा कर हज को चले । आपने सम्प्रदायवाद को पैदा किया है इस देश में । आज इस देश में जो कुछ हो रहा है उसकी जननी आप हैं । आपने यह किया है । हमने कहीं पर यह नहीं कहा है। राम मन्दिर की बात जो आई इसलिए कि धर्म स्थलों पर आप कानून लाये । उसमें आपने राम जन्म भूमि को अलग निकाल दिया । जब श्री गोविन्द वल्लभ पंत चीफ मिनिस्टर थे उत्तर प्रदेश में और कांग्रेस का राज था तब दीवार टूटी । कीर्तन शुरु हुआ था । रामलला बैठे थे । 86 में जब आपकी सरकार आई तो वीर बहादुर सिंह मुख्य मंत्री थे तब ताला खुला था और उस वक्त राजीव गांधी प्रधान मंत्री थे । जब उत्तर प्रदेश में श्री नारायण दत्त तिवारी मुख्य मंत्री थे और श्री बूटा सिंह गृह मंत्री थे और राजीव गांधी प्रधान मंत्री थे तो आपने शिलान्यास कराया । आपने रामायण का सीरियल टेलीविजन पर दिखाया । लोगों ने रेल गाड़ियों से जाना बन्द कर दिया। प्लेटफार्म पर चेन खींची गई, दफ्तरों में लोग नहीं गये लेकिन रामायण सीरियल देखना नहीं छोड़ा । यह प्रचार करने वाले आप हैं। हमने कहा जो कि काम आपने किया है 40 साल से लोगों को बहकाने का, लड़ाई कराने का, अदालतें उसे नहीं करना चाहती तो हम इसको पूरा करना चाहते हैं । यह है धर्म । हमने धर्म का काम किया है । हमने झूठ नहीं बोला । आपने अधर्म का काम किया । हम सब समझते हैं कि अगर हम चुनाव में कोई प्रचार मजहब का करेंगे, सम्प्रदाय का करेंगे तो यह जो पीपल्स रिप्रेजेन्टेटिव एक्ट है उसमें हम डिसक्वालिफाई हो जायेंगे । हमारे खिलाफ मुकदमा भी चल सकता है । हम सजायाफ्ता भी होंगे । संविधान के मुताबिक भी इंडियन पीनल कोर्ट की

[श्री संघ प्रिय गौतम]

धारा 153 है और 295 है जिसके तहत मुकदमा चलाया जा सकता है। इस बिल की कोई आवश्यकता ही नहीं है। अनेक जगह सजा देने की हैं। विधेयक की आवश्यकता अगर आप समझते हैं तो कल आपके प्रधान मंत्री का सारा भाषण इसी पर था। मोरारका भाई ने भी यही बात कही। आप अपनी सरकार से कहते, आपकी पार्टी की सरकार है, एक ऐसे विधेयक की आवश्यकता है, दिस इजाद बर्निंग प्रोब्लम, इसलिए विधेयक लाइये। जब आपकी सरकार नहीं मानती तो क्या छोड़ कर चले जाते और तब आप कहते प्रस्तुत करते समय कि हमने अपनी सरकार को कहा लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी इसलिए मैं यह बिल लाया हूं व्यतिगत रूप से। आपने यहां भी अधर्म का काम किया। क्योंकि धर्म के माने सच्चाई, सच बोलना है। एक अधर्म वाला व्यक्ति धर्म का काम कैसे कर सकता है। यानी जाके पैरन फटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई। वही काम आपने किया।

मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा क्योंकि मैं चाहता हूं गरिमा को बनाये रखूं। वैसे मेरे पास बहुत से विचार हैं। क्योंकि हम इसे स्वीकार करते हैं मैं पिछड़े परिवार से, गरीब घर से, गांव से निकल कर आया हूं। मेरी शिक्षा-दीक्षा भी अधिक नहीं है। जो मेरे मित्र कांग्रेसी यहां से उठ कर चले गये हैं उनमें और हम में जमीन और आसमान का अंतर है। वह उसी रिजर्वेशन से आते हैं, रिजर्वेशन का फायदा उठाते हैं, वह एम०एल०ए० बनते हैं, एम०पी० बनते हैं और वही आज रिजर्वेशन का विरोध कर रहे हैं। वे आज रिजर्वेशन का विरोध कर रहे हैं, वे अनुसूचित जातियों के विरोध में बोल रहे हैं। मैंने अपने जीवन में इसका कभी लाभ नहीं उठाया है। मैंने धर्मान्तरण करके 1957 में चुनाव लड़ा था तो जनरल सीट से लड़ा था। मैंने अपनी फीस माफ नहीं करवाई, वजीफा नहीं लिया और रिजर्वेशन का कोई लाभ नहीं लिया। लेकिन जिन्दगी भर इन लोगों के लिए लड़ा हूं और लड़ता रहूंगा। इस सदन में भी लड़ता हूं, अपनी पार्टी में भी लड़ता हूं और जब तक ये लोग समान स्तर पर नहीं आ जाते हैं, अन्याय समाप्त नहीं हो जाता है तब तक लड़ता रहूंगा। आप और हम में अन्तर यह है कि आप अधर्मी हैं और हमारा यह धर्म है। आपकी पार्टी वाले धर्म के मायने जानते ही नहीं हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं और इस बिल का विरोध करता हूं क्योंकि यह बिल गलत है, इसकी परिभाषा गलत है, लेकिन मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मैं भी इस विचार का हूं कि सम्प्रदायवाद पर चर्चा होनी चाहिए और चर्चा के दो स्थान हैं। सेकुलरिज्म पर बहस होनी चाहिए और इसके लिए भी दो स्थान हैं। आज आप जितने भी राजनैतिक दल हैं, आप भारतीय जनता पार्टी के विरोध में बोलते हैं। अगर आप भारतीय जनता पार्टी को डेमोक्रेटिक तरीके से खत्म करना चाहते हैं तो मैं सुझाव दे रहा हूं। उपसभाध्यक्ष जी, आपकी आज्ञा से मैं कहना चाहता हूं कि आप अपनी तमाम अधर्मिता को छोड़कर धर्म के नाम पर एक हो जाइये और भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ सारे देश में सेकुलेरिज्म के मायने बता करके, इसकी परिभाषा बता करके कहें कि हम सब से बड़े सेकुलर हैं, हम धर्मवादी हैं लेकिन सम्प्रदायवाद के विरोधी हैं तुरंत चुनाव कराइए। सारा हमारे खिलाफ प्रचार करें। एक तरफ तो आप सब पार्टियां हों और दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी हो और आप चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को हरा दें। मैं यह सुझाव ईमानदारी से दे रहा हूं। आप सब रामो-वामो, कामो, एक हो जाइये। भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ चुनाव लड़ लो और सारे देश में चुनाव करा लो। लेकिन जो यहां पर बैठे हुए हैं वे क्या हैं? ये अधिकतर आपसे निकल करके, आए हैं ये छः महीने तक तो एक नहीं रह सकते हैं और साल भर तक अलग नहीं रह सकते हैं। इनका कोई विश्वास करने वाला नहीं है। इनकी कोई क्रेडिबिलिटी नहीं है... (व्यवधान)

They have lost their credibility.

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI): Gautamji, please try to conclude. Please conclude.

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, मैं खत्म कर रहा हूं । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप सम्प्रदायवाद पर और कम्यूनेलिज्म पर सदन में चर्चा कीजिये । इस पर चर्चा होने दीजिये । लेट अस डिफाइन कम्यूनेलिज्म । आप कम्यूनेलिज्म को डिफाइन कीजिये और सर्व-सम्मति से और बहुमत से एक बिल लाइये । मैं उस विधेयक को सपोर्ट करुंगा, आपका समर्थन करुंगा । लेकिन इस प्रकार से केवल प्रोपेगेन्डा मत कीजिये । इसका कोई इम्पेक्ट सोसायटी पर होने वाला नहीं है । लेकिन अगर आप समझते हैं कि इसका कोई इम्पेक्ट सोसायटी पर होने वाला है तो फिर चुनाव कराने से क्यों डरते हैं । आप चार स्टेटों में और पार्लियामेंट के चुनाव कराइये । लेकिन आपने तो देश का दिवाला निकाल दिया है ।

You have no right to continue in office. You have to resign and face polls.

आपको चुनाव कराने पड़ेंगे । इन शब्दों के साथ आपको धर्म की सलाह देते हुए मैं आपके इस अधर्मी विधेयक का घोर विरोध करता हूं ।

SHRI JOHN F. FERNANDES: (GOA): Mr. Vice-Chairman, I rise to support the Banning of Communal Political Parties Bill, 1993, moved by Shri Ahluwaliaji and I compliment him, I congratulate him for bringing forward this Bill in the nick of time. He has mentioned in sub-clause (3) of clause 1 that the Bill will come into force on 6th December, 1992. Sir, it is a very critical day. We have seen that it is the second day which is a black spot in the history of our country. The first blot was the partition of our country, the communal holocaust, and on 6th December last year we had seen the same thing, and history was repeated. So, I feel that it is very appropriate that Ahluwaliaji mentioned in this Bill that this Act will come into force on that particular date. I think it will go down in the history and it is a good lesson for the posterity.

Sir, Ahluwaliaji has mentioned that this should be a separate Bill or a separate Act. We have piecemeal legislation in this country. No Act is a fool-proof Act to put a full stop to any evil of the society, whether in the society in general or in the election laws of the country. Therefore, while welcoming this Bill I would like to suggest that this Bill should be on the pattern of the Tenth Schedule, the Anti-Defection Act. We have the Tenth Schedule. I think it will be appropriate that such a law disqualifying all political parties appealing to the religious sentiments should be put not in any other statute but in the Constitution itself. Therefore, I would suggest that it should be called the Eleventh Schedule to the Constitution. We know that the Tenth Schedule of the Constitution has got so many loopholes. We have seen that para 7 of that Act, Tenth Schedule, has been struck down by the Supreme Court in November 1991. So I feel, we have to have a national debate, take the political parties into confidence, take the intellectuals of our country into confidence and evolve a law to see that religious and communal sentiments are not exploited to come to power by any political party.

Sir, secularism is the corner-stone of the unity of this country. We have seen how secularism is sustained in this country. We have seen how secularism is sustained in this country for the last 45 years. On the other hand, we have seen how the non-secular countries, even the splinter one of the our own country, Pakistan, have divided. We have seen how the people of that country which perpetuated communalism, which sought to remove people who do not belong to that particular community out of that cuntry, had revolted and Bangladesh was created. I detailed the other day, while speaking on the Bill moved by me, that India was not the same as it was in 1947.. We have not reduced to geographical boundaries like other countries. We have seen that many more States

[Shri John F. Fernandes]

have amalgamated and annexed themselves to our country. It was not done by force. We have Jammu and Kashmir. It joined the Indian Union in 1948 much after the indepedence of India. We have seen how the State of Hyderabad joined the Indian Union. We have the State of Sikkim. The people there voluntarily opted to join the Indian Union. Then we have seen smaller territories like Pondicherry, Goa, Daman and Diu and such other territories coming together and joining the Indian Union. I feel secularism is the main binding force, cementing force, which keeps this country together. We have seen how in other parts of the world countries came together. We have seen what happened when a country was divided on 'ism', may be Communism or whatever you may call it. We have seen what happened to the erstwhile divided Germany. We saw what happened in East Germany. I had occasion to visit that part of the world at least two times. People were not happy there. Communism was imposed on them and one day the people there revolted against it and they came together. The same thing is being repeated in Korea. I have visited North Korea, Pyongyang. Communism was imposed there also. People are not happy when they are suppressed. Communism means that there is no religion. So, I feel the only binding force for any country to keep it together is secualrism and secularism does not mean any particular religion. It does not mean any religion or any particular community or the majority community. It means all religions, the majority religions and the minority religions. All religions are having equal respect. We have seen that, of late, political parties are taking recourse to communalism. I feel that they are not to be blamed. Actually, it is high time that our system was overhauled. I think, our political system has outlived. We have to go in for some evolution. We have to have some steps taken. I think it is high time that we overhauled all our legal system. We have to overhaul our Constitution also. This Parliament is very much competent to see that there is a Constituent Assembly. We have article 368. We can amend the Constitution according to Part XX of the Constitution. But I dont think it will be proper for the politicians to sit in judgment over themselves. Because, both the Chambers are full 5,00P,M, of politicians with political ideas, political thought. Therefore I would suggest to have a national debate to see that the system is overhauled. We have to call a second constituent assembly where the....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): Mr. Fernandes, it is alerady 5 p.m. You can continue in the next Private Members' Legislative Business.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE (Maharashtra): Sir, the Home Minister is here. He must have been apprised of a very serious situation in Bombay due to bomb explosions in most important places like the Air India building, Stock Exchange building, Century Market where over 62 people have died. It is a simultaneous job. I mean, one does not need any proof to see that it involves the highest international terrorism to have a situation like this. May I request the Home Minister to respond and tell us something about it because the situation is extremely grim?

THE VICE-CHAIRMAN (Shri SYED SIBTEY RAZI): Before the Home Minister responds to your point, there is a second Supplementary List of Business. Shri S. B. Chavan.

PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 OF THE CONSTITUTION THE MINISTER OF HOME AFFAIRS

(SHRI S. B. CHAVAN): Sir, I lay on the Table a copy each in English and Hindi) of the following papers:—